दिव्य औषधीय, सुगन्धित एवं सौन्दर्यकरण पौध

डॉ० बी० डी० शर्मा, वैद्यराज आचार्य बालकृष्ण एवं आचार्य मुक्तानन्द



दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट)

कृपालु बाग आश्रम, कनखल, हरिद्वार-249408

फोन :- 01334-240008, 244107, 246737

फैक्स :- 244805

e-mail : divyayoga@rediffmail.com

Visit us : www.divyayoga.com



आरोग्य अध्यात्म संस्कृति संस्कार शिक्षण

दिव्य औषधीय सुगन्धित एवं सौन्दर्यकरण पौध

: सम्पादन :

डॉ० बी०डी० शर्मा, वैद्यराज आचार्य बालकृष्ण
एवं
आचार्य स्वामी मुक्तानन्द



दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट)

कृपालु बाग आश्रम, कनखल,
हरिद्वार- 249408

दूरभाष : 01334-244107, 240008, 246737

e-mail : divyayoga@rediffmail.com
visit us at: www. divyayoga.com

ओ३म्

- प्रथम मुद्रण : 2004
- दिव्य औषधीय सुगन्धित एवं सौन्दर्यकरण पौध

- ISBN : 81-09235-05-2

प्रकाशक : **दिव्य प्रकाशन,**
दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट),
कृपालु बाग आश्रम, कनखल,
हरिद्वार- 249408

e-mail : divyayoga@rediffmail.com
visit us at: www.divyayoga.com

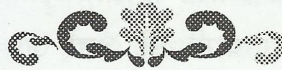
दूरभाष : 01334-244107, 240008, 246737
फैक्स- 01334-244805

एकमात्र वितरक: **डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.**
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II,
नई दिल्ली - 110020
फोन : 011-51611861, फैक्स : 011-51611866

e-mail : sales@diamondpublication.com
visit us at: www.diamondpublication.com

मुद्रक : ऋषि ऑफसैट प्रिंटर्स, वेद मन्दिर, गीता आश्रम,
ज्वालापुर, हरिद्वार, ☎ 01334-253846

विषय-सूची



प्राक्कथन

"दिव्य योग मंदिर" पिछले 9-10 वर्षों से जनसेवा में प्रयासरत है। यह जनसेवा कार्य पिछले कुछ वर्षों से निरन्तर व्यापक होता जा रहा है। इसके दो पहलू विशेष हैं– (1) आयुर्वेद द्वारा कठिन व जटिल रोगों को उपचार व (2) यौगिक क्रियाओं द्वारा इस चिकित्सा-कार्य को और अधिक सक्षम व सर्वसुलभ बनाना। यह सब इस संस्था के विशेष संकल्प के अधीन अग्रसर हो रहा है। यह संकल्प है, भारत के जन-जन को स्वस्थ जीवन शैली प्रदान करना। यह पुनीत कार्य दिव्य योग मंदिर द्वारा कई तरह से किया जा रहा है। इसमें उल्लेखनीय हैं–

1. आयुर्वैदिक चिकित्सा कार्य के लिए गुणवत्तायुक्त औषधियों का निर्माण।
2. हिमालय के दुर्गम क्षेत्रों में भ्रमण कर औषधीय पौधों की सही पहचान सुनिश्चित करना।
3. विभिन्न औषधीय पौधों को इकट्ठा करके उद्यान में संरक्षित करना जिससे इन पौधों का औषधीय निर्माण कार्य में उपयोग किया जा सके।
4. सही पहचान वाले पौधों को खेती के रूप में उगाने के कार्यक्रम को क्रियारूप देने का भविष्य में प्रयास।
5. जन-जन को सर्व सुलभ औषधीय पौधों का ज्ञान प्रदान कर उन्हें इन पौधों का संरक्षण करने की चेतना देने का टी0वी0 चैनलों के माध्यम से प्रचार एवं प्रसार करना।
6. अधिक उपयोगी पौधों को सुलभ करने का प्रयास आदि।

पूज्य स्वामी रामदेव जी तथा चिकित्सक शिरोमणि वैद्यराज बालकृष्ण जी के इस दिशा में किए गए व किए जा रहे प्रयासों से अधिकांश भारतवासी परिचित हैं। इन प्रयासों को आगे गति देने में बहुत से सहयोगी भी आगे आ रहे हैं।

हरिद्वार में 'हर्बल गार्डन' का महत्व तथा 'दिव्य योग मंदिर' का जन स्वास्थ्य में औषधीय पौधों को महत्व प्रदान में सहयोग–

हर भारतवासी के लिये 'हरिद्वार' गहरी धार्मिक आस्था को अन्तर्निहित किये हुये है। इसके अतिरिक्त यह स्थान अतिप्राचीन काल से ही अनेकों ऋषि, मुनि व तपस्वी जनों का भी प्रिय स्थान रहा है। यहाँ इन महान् आत्माओं की विशेष अदृश्य करुणा सदैव विद्यमान रहती है। यही नही इसके आसपास के जंगलों में अनेकों प्रकार की जड़ी-बूटियाँ

सुगमता से प्राप्त हो जाती हैं, जो नैसर्गिक गुणों से भरपूर होती हैं। गंगा जी का पवित्र जल भी इसमें योगदान दे रहा है।

'दिव्य योग मंदिर' में चिकित्सा हेतु आने वाले लोगों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जो आजकल 3000 से 4000 तक होती है। इसके अतिरिक्त पूज्य स्वामी रामदेव जी के सानिध्य में पूरे देश में योग शिविर का क्रम थमता नजर नहीं आ रहा है। सुगमता से उपलब्ध होने वाले औषधीय पौधों के विषय में टी०वी० के माध्यम से स्वमी रामदेव जी के द्वारा प्रवचन करने से एक बार फिर जनमानस में एक नयी चेतना व आस्था का संचार होने लगा है। उदाहरण के रूप में अश्वगंधा के पत्तों का शारीरिक भार कम करने की नई खोज व्यापक रूप से सराहना का केन्द्र है, विशेष रूप से जब इसका उपयोग यौगिक क्रियाओं जैसे प्राणायाम (कपालभाती, भस्त्रिका आदि) के साथ करने से अदभुत 20 किलो तक वजन प्रतिदिन कम करने के परिणाम सामने आए हैं। इसके अतिरिक्त गिलोय, पुनर्नवा, बला, भूंई आंवला, श्योनाक, दमा बूटी आदि के बारे में जन जागरण विशेष महत्त्व प्राप्त कर चुका है। वैद्य शिरोमणि बालकृष्ण जी महाराज ने हेपाटाइटिस-बी व सी के रोगियों, मधुमेह (Diabetes), उच्च-रक्तचाप (H.B.P.), जोड़ों के दर्द आदि के कष्टसाध्य रोगियों की सफल चिकित्सा करके, चिकित्सा-संसार में व जनमानस में एक नया उत्साह व आस्था का उदय किया है। लोगों में अब पुनः जड़ी-बूटी चिकित्सा के प्रति एक नई आस्था उमड़ पड़ी है। भारत के विभिन्न भागों से लोग केवल जड़ी-बूटी की जानकारी व प्राप्ति के लक्ष्य से 'दिव्य योग मंदिर' आश्रम में आ रहे हैं।

'दिव्य योग मंदिर' द्वारा अष्टवर्गीय औषधीय पौधों की पुनः प्रतिष्ठा (स्थापना)–

पिछले 4-5 वर्षों में हिमालयी दुर्गम क्षेत्रों की खोज-यात्राओं के फलस्वरूप अष्टवर्ग की सही पहचान कर ली गई है तथा इनके प्राप्ति-स्थलों का ज्ञान भी हो चुका है। इनके बारे में शीघ्र ही हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में विवरण पुस्तकें छपवाई जा रही हैं। हिमालयी शीत प्रदेशों में यदि कहीं भूमि उपलब्ध हो सकी तो इनकी खेती करने के प्रयास हो सकेंगे, ऐसी आशा की जाती है।

सौन्दर्यकरण पौधों का एकत्रीकरण व प्रवर्धन–

इस क्षेत्र में भी 'दिव्य योग मन्दिर' तीव्र गति से अग्रसर हो रहा है। बहादराबाद स्थित कृषि क्षेत्र में एक पौधशाला मूर्त्तरूप लेने जा रही है, जो एक उदाहरणीय

प्रयास के रूप में उभरने वाली है। इस समय आश्रम के उद्यान में 100-150 प्रजातियाँ गुलदाउदी की, 90-100 प्रजातियाँ डहलिया की, 30-40 प्रजातियाँ गुलाब की, 20-25 प्रजातियाँ ग्लैडियोलाई की, 14-15 प्रजातियाँ वोगनविलिया तथा अन्य कई प्रकार के फूल संरक्षण के रूप में यहाँ हैं। इस काम में सिद्धहस्त आचार्य मुक्तानन्द जी सराहनीय योगदान देने मे संलग्न हैं। आने वाले समय में इस क्षेत्र में विशेष प्रयास किये जाने की योजना अपने अंतिम रूप में है। पौधशाला में लगभग 50-60 प्रकार के पौधे तैयार किये जा चुके हैं। यह भी जनस्वास्थ्य से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है।

वानस्पतिक औषधीय पौधे तथा उनके गुण-धर्म व प्रयोग-

आयुर्वेद में कुल अनुमानित 45000 पौधों में से अभी लगभग 1500 पौधे ही ऐसे हैं जिनका औषधीय उपयोग किया जाता है, जबकि आयुर्वेद में लगभग 1500 पौधे, कुल अनुमानित 45000 पौधों में से औषधीय उपयोग में अभी होते हैं, जबकि ऐसा माना जाता है कि धरती पर होने वाला ऐसा कोई पौधा नहीं जो औषधीय गुणयुक्त न हो। यदि हम वैदिक काल के साहित्य का अवलोकन करें तो ज्ञात होता है कि वेदों में व वेदांगो में 105 औषधीय पौधों का उल्लेख मिलता है। चरक संहिता में औषधीय पौधों की संख्या 400 है।

सर्वसाधारण की जानकारी व उत्सुकता के लिए आगे कुछ पौधों के हिन्दी व वानस्पतिक नाम के साथ उनके मुख्य गुणधर्म दिए जा रहे हैं। इसका मुख्य उद्‌देश्य सभी को जड़ी-बूटी सम्बन्धी जानकारी से अवगत कराना है तथा इनके संरक्षण व उपयोग के लिये प्रेरित करना है। हमारे गाँवों में बहुत-सी सर्वसुलभ ऐसी जड़ी-बूटियाँ हैं, जिनके उपयोग से बहुत रोगों का इलाज चमत्कारी असर दिखाता है और पैसे का दुरूपयोग भी बच जाता है। इस विवरणिका में बहुत ही संक्षिप्त वर्णन है। आशा है कि जिज्ञासु सज्जन इससे प्रेरणा प्राप्त कर, अन्य स्रोतों से विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का प्रयास अवश्य करेंगे। इसमें घरेलू औषधीय पौधों के अतिरिक्त सर्वसुलभ विभिन्न मौसमों में उगने वाले व हमेशा मिलने वाले पौधों की सूची देने का अल्प प्रयास किया गया है।



(क) घरेलू औषधीय पौधे

1. **Allium Cepa Linn.** **प्याज**
Cholera, Sciatica, Skin Problems, Epileptic Fits etc.
व्रणशोथ, गृध्रसी, योषापस्मार, कास, चर्मरोग, शोथरोग, संधिवात।

2. **Allium Sativum Linn.** **लहसुन**
Anti-inflammatory effect in arthritis, anti-bacterial, hypoglycemic, diaphoretic, diuretic, expectorant, effective as ear drops in oil, ear problems, lowers cholesterol and blood pressure anti-coagulant.
पक्षाघात, गृध्रसी, हृदयरोगों में, अर्श, अजीर्ण, जीर्ण-कास आदि।

3. **Elettaria Cardamomum Maton.** **छोटी इलायची**
Stimulant, masticatory, spice, diuretic.
वातहर, शीतल, श्वास-कासहर, हृदय के लिय उत्तम, रोचन, दीपन।

4. **Ammomum Subulatum Roxb.** **बड़ी इलायची**
Analgesic, Skin Problems, boils, carminative, diuretic, poison anti-dote, anti-pyretic, removes odour from mouth.
विषघ्न, कफ-निःसारक, त्वग् दोषहर, दुर्गन्धनाशन, व्रणरोपण, दीपन, पाचन, अनुलोमन, वेदनास्थापन।

5. **Coriandrum Sativum Linn.** **धनिया**
Brain tonic, carminative, digestive, wormicidal, diuretic.
मस्तिष्क के लिये बल्य, रोचन, दीपन, पाचन, कृमिघ्न, मूत्रजनन।

6. **Curcuma Longa Linn.** **हल्दी**
Anti-septic, useful in ulcers, wounds, cold, cough, bronchitis, conjuctivitis, liver diseases, sprain, painful oedema.
सर्दी, खांसी-जुकाम, चर्मरोगहर, वर्ण्य, विषघ्न, शोथघ्न, चोट आदि में हितकर।

7. **Cuminum cyminum Linn. सफेद जीरा**
Carminative, digestive, anti-flatulent, wormicidal, antipyretic, tonic, diuretic, cardiac & blood disorders.
अरुचि, अग्निमान्द्य, अजीर्ण, ग्रहणी, अर्श, कृमि, रक्तविकार, मूत्राघात, नवीन व पुराने ज्वरों में हितकारी, बलवर्धक, श्वेतप्रदर।

8. **Ocimum Sanctum Linn. Sacred basil. तुलसी**
Aromatic, Carminative, Antipyretic, diaphoretic, expectorant.
वातहर, कफहर, ज्वरहर, दीपन, श्वास-कासहर, विषघ्न, हृदय के लिये उत्तम।

9. **Ocimum Basilicum Linn. Sweet basil. बर्बरी तुलसी**
Carminative, cooling, cures kapha and vaata disorders, dyspepsia, cough, constipation, bronchitis, fever etc.
कफवातशामक, अरुचि, अग्निमांद्य, हृदय की कमजोरी, रक्तविकार, कास-श्वास, कण्डू, कष्टार्तव, पत्र तथा मूल विषहर।

10. **Piper Nigrum Linn. Black Pepper. काली मिर्च**
Alterative, stimulant, carminative, a valuable gastrointestinal stimulant, stomachic, congestive chills, indigestion, Kasahar, Pitkar.
कफवातजन्य रोगों में हितकर, यकृत-विकार, अजीर्ण, अग्निमांद्य, प्रतिश्याय, कास-श्वास, रजोरोग, चर्मरोग, शीतज्वर, मूत्रकृच्छ।

11. **Zingiber Officinale Rosc. Ginger. अदरक**
Stimulant, carminative, much valued in atonic dyspepsia and flatulence, rub-efacient, relieves headache.
कफवातजन्य विकारों में, वातव्याधि में, कोष्ठवात, अग्निमांद्य, अरुचि, कास-श्वास, हिक्का, प्रतिश्याय, हृदय रोगों में, शोथ, आमवात आदि।

(ख) ग्रीष्म व बरसात ऋतु के पौधे

12. Abelmoschus Esculentus Moench. Lady's finger. भिण्डी
Nutritious, appetising, laxative, aphrodisiac, useful in chronic dysentery, difficulty in urination.
पित्तशामक, श्लेष्महर, बलदायक, रूचिकर, हाजमा बढ़ाने वाली।

13. Abelmoschus Moschatus Medic. Musk Mallow. कस्तूरी भिण्डी
Root and leaves useful in micturition and as aphrodisiac.
कफ पित्त के रोगों में, मुख दुर्गन्धिनाशक, रुचिकर, दीपन, हाजमा करने वाली, मूत्रल, वृष्य, हृदयोत्तेजक।

14. Abrus Precatorius Linn. Crab's Eye. गुञ्जारत्ति
Plant is bitter, emetic, tonic, vermifuge, demulcent, emollient, thermogenic, antihistaminic, antiseptic, aphrodisiac, beneficial for hair, root is emetic, alexiteric, diuretic, tonic, seeds are purgative, emetic, aphrodisiac, useful in nervous disorders.
बीज कफवातशामक, पत्र त्रिदोषहर, विशेषतः वात-पित्तशामक, वात व्याधि, पक्षाघात, बाल गिरने में, चर्मरोगों में, बीजों का प्रयोग शुद्ध करके, चौलाई के पत्तों का रस चीनी के साथ खाने से इसके बुरे प्रभाव को ठीक करता है।

15. Abutilon Indicum Linn. Sweet. अतिबला
Febrifuge, anthelmintic, antiinflammatory, piles, lumbago, convulsion, cramps, consumption, bronchitis.
वातपैत्तिक विकारों में, व्रणशोथ, नेत्ररोग, पक्षाघात, उरःक्षत, रक्तपित्त, प्रदर, शुक्रमेह, हृद्दौर्बल्य, क्षयरोग, कृशता।

16. Achyranthes Aspera Linn. Pricklychaff. अपामार्ग
Cardiotonic, Carminative, diuretic, ascite, enlargement of cervical glands, piles, urinary diseases, boils etc.

कफवात रोगों में, शोथ वेदनायुक्त विकारों में, गुहेरी, अर्श, पित्ताश्मरी, हृद्‌रोग, रक्तविकार, आमवात, शोथ रोग, अश्मरी, चर्मरोग, दौर्बल्य।

17. Adiantum Philippense Linn. (=A. Lunalatum Burm) हंसपदी
Alexiteric, blood diseases, burning sensation, eliptic, fits, dysentery, ulcers, atrophy, muscular pain, emaciation, fronds applied to gouty and other swellings.
कफपित्तशामक, विसर्प, लूताविष, व्रण, रक्तपित्त, दाहप्रशमन, विषघ्न।

18. Aerva Lanata Juss. अश्माभेद, पाषाणभेद
Cooling, diurectic, lithotriptic, diabetes, lithiasis.
मूत्रजनक, वेदनास्थापन, कासहर, अश्मरीघ्न (सर्वोत्तम दवा)

19. Aloe Barbadensis Mill. घृतकुमारी, घीक्वार
Cures Piles, Coughs, cold, stimulant for hair growth, useful in painful inflammation, chronic ulcer, skin problems.

20. Althoea Officinalis Linn. खत्मी
व्रणशोथ, स्तनशोथ में पत्तों का लेप, अन्य शोथ अन्त्रावरोध में बीज व मूल क्वाथ, मूत्रदाह, मूत्राघात आदि।

21. Amaranthus Spinosus Linn. कांटा चौलाई
Cooling, carminative, laxative, uterine pain, stops bleeding, leucorrhoea, habitual tendency for abortion, leaf poultice useful in boils, abscesses and burns.
कफपित्तशामक, रोचन, दीपन, हृदय, मूत्रल, दाह प्रशमन, विषघ्न, शोथ, स्तन व गर्भाशय की वेदना, अशक्ति, अत्यातर्व आदि।

22. Amorphophallus Companulatus Blume. सूरण, जमींकद
Arshoghna, Carminative, tonic, stomachic, restorative, cures piles, colic, abdominal tumours, obesity, asthma, improves action of liver, removes constipation.
कफवात विकारों में, सन्धिशोथ व अर्बुद लेप, अर्श, कास-श्वास आदि।

23. **Anacyclus Pyrethrum DC. Pellitory. जड़वाला अकरकरा**
Cordial, stimulant, sialgogue, used in rheumatism, roots used in toothache, tonic to nervous system, tonsilitis, pharyngitis.
कफवातजनित रोगों में, पक्षाघात, नाड़ी दौर्बल्य में तेल के रूप में, मूल क्वाथ, कुल्ला करने से दन्तकृमि, दन्तशूल, कंठशालुक शोथ, आमवात, शोथ।

24. **Andrographis Paniculata Nees. कालमेघ**
Cures bacillary dysentery, the ionotropic effect on heart, hepoprotective, antipyretic, promotes digestive functions.
कफपित्त विकारों में, यकृत-उत्तेजक, दीपन, शोथहर, ज्वरघ्न, कृमिघ्न, यकृत्-वृद्धि, विबन्ध, रक्तविकार, कामला, ज्वरोत्तर दौर्बल्य।

25. **Aristolochia Indica Linn. नाकुली, ईश्वरमूल**
Gastric stimulant in atonic dyspepsia, stimulant, tonic, emmenagogue, intermittent fevers, chronic skin ulcers, antisnake poison.
कफवात विकारो में, सर्पविष में, व्रणों में, शोथ वेदनायुक्त विकारों में, मानस रोगों में, उदरशूल, त्वचा रोगों में, विषम ज्वरों में, सभी प्रकार के विषों में।

26. **Artemisia Vulgaris Linn. दमनक, दोना नागदमन**
Stomachic, deobstruent, emmengogue, anthelmintic, antispasmodic, useful in cough, asthma, bronchitis, nervous and spasmodic affections, antilithic alexipharmic.
त्रिदोषजन्य विकारों में, शोथवेदनायुक्त रोगों में, व्रणशोथ, वातव्याधि, उदरशूल, यकृत्-विकार, पित्ताधिक्य, श्वास-कास।

27. **Andropogon Citratus (DC) Staps. Lemon Grass. रोहिषा**
Stimulant, diaphoretic, antispasmodic, antifungal, antibacterial, mosquito repellent, effective for Root and nemalodes.
कण्डू, कास, शूल, कफज्वर के लिये उपयोगी।

28. Anethum Sowa Roxb. Ex Flem., Sowa, Indian Dill
शुतपुष्पा, कड़वी सौंफ, चपटी सौंफ

Seeds are digestive, carminative, stimulant, stomachic, anthelmintic diuretic, emmengagogue, galactagogue, cough, cardiac debility, ulcers ammenrrhoea, dys menorrhoea.

कफवातजन्य विकारों में, अजीर्ण, अग्निमांद्य, हृद्दौर्बल्य, शोथ, कष्टार्तव, रजोरोध, कास-श्वास, उदरशूल, हिक्का, योनिशूल, ज्वर, अरुचि।

29. Apium Graveolens Linn. Celery अजमोद

Herb is antioxidant, prevents gout and rheumatic pains, used as tonic, carminative, diurectic, emmengogue, seeds stimulant. cordial, tonic, aphrodisiac, rheumatism, antispasmodic, sedative, urinary antiseptic, nervine.

कफवात रोगों में, वृष्य, बल्य, दीपन, उष्ण, हृद्य, हिक्का, आध्मान, अरुचि, नेत्ररोगहर, कृमिघ्न, आमपाचक, ग्राही, जठराग्नि, प्रदीपक, वीर्यविकारनाशक।

30. Arachis Hypogaea Linn. Peanut, Ground Nut मूँगफली

Pod (Unripe) galactogogue, decoction of pods with water hypotensive, oil aperient, emollient.

वातकफ करने वाली, अनुलोमक, व्रणरोपण, पौष्टिक।

31. Argemone Mexicana Linn. Yellow Thistle स्वर्णक्षीरी

Antheliminitic, antileprotic, tonic, diurectic, antidote, root is alterative, useful in chronic skin diseases, seeds laxative, emetic, narcotic, poisonous in large quantities.

कफपित्तहर, उष्ण, विरेचक, शोथहर, व्रणशोधन, मूत्रल, वेदनास्थापन, कृमिघ्न, अनाह, विषघ्न, रक्तशोधक, रोपण, विबन्ध।

32. Asclepias Curassavica Linn. Wild Ipecacunanha. काकतुण्डी

Used in phthisis, styptic, purgative, cardiotonic, root decoction used in cancer, leaf juice antidysentric, anthelmintic, sudorific and used in haemorrhages.

उष्ण, यकृत्-उत्तेजक, आमाशयोत्तेजक, स्वेदजनन, कफघ्न, अनुलोमक।

33. Asparagus Officinalis Linn (=A. adscendens Roxb.)
शतावरी, सहस्रपदी

Diuretic, demulcent tonic, cardiac, sedative, aphrodisiac, useful in chronic gout, flatulence, calculous.

शीत व स्निग्ध, वृष्य, पौष्टिक, पित्तदाह, श्रमहर, वातपित्तशामक, कफवर्धक, शूलघ्न, रसायन।

34. Asparagus Racemosus Willd. शतावरी, शतपदी

Contains saponins 10%, increases bleeding time, slight diuretic & hypotensive, antipepti ulcer, antioxytocic, antidiarrhoaic, antidysentric, antiseptic, nutritive & tonic.

पित्तघ्न, वातघ्न, कफकारक, वृष्य, बल्य, दीपन, वयःस्थापन, वेदनास्थापन, रसायन, स्तन्यकारी, शूलघ्न, व्रणरोपण।

35. Bacopa Monnieri (Linn.) Wettzt. नीर ब्राह्मी, ब्राह्मी

Alkaloids 0.25%, cardiotonic, tranquillizer, sedative, improves, learning & memory, diuretic, nervine tonic, antistress, brain tonic, useful in epilepsy, hysteria, nervous breakdown, enhances power of imagination.

कफवातज रोगों में, त्रिदोष, वात-पित्त शामक, दीपन, पाचन, शोथहर, स्वर्य्य, मेध्य, विषहर, ज्वरघ्न, वेदनाशामक, कफघ्न, कण्डहर, रसायन ।

36. Barleria Cristata Linn. लाल कटसरैया, सहचर

Antiseptic, Leaves used in toothache, urinary and paralytic problems

कटुपौष्टिक, कफवातनाशक, शोथ, तृष्णा, विदाह, खुजली, रक्तविकार, चर्मरोग, दन्तविकार, केशों को पुष्ट व काला करने वाला और बढ़ाने वाला है। पत्तों का रस पाँव के तलवों में लगाने से अधिक गर्म व सर्दी आदि का असर रुकता है।

37. Barleria Strigosa Willd. नीला कटसरैया

स्वर सुधारने वाला, पंचाग क्वाथ व घृत वातज क्षय रोग में उपयोगी।

38. Barleria Prionitis Linn. **पीला कट सरैया, पिया वांसा**

Antiseptic, infusion applied to soles to tolerate extreme heat, cold and rough soils, leaves useful in paralytic, urinary problems, lacerated soles, stomach disorders.

कफवातजन्य विकारों में, शोथ, विद्रधि, गण्डमाला, चर्मरोगों में, वातरक्त।

39. Banincasa Hispida (Thunb). Cogn. Ashgourd. **पेठा**

Fruit is laxative, diuretic, tonic, aphrodisiac, antiperiodic, specific for haemoptysis, fruit juice used in insanity, epilepsy, nutritious.

मेध्य, पित्तशामक, वात-शामक, सर्वदोषहर, मांस धातु बढ़ाने वाला।

40. Blumea Lacera DC. **कुकरौंधा**

Antipyretic, cures bronchitis, blood diseases, is liver tonic, digestive, diuretic, stimulant, useful in cholera.

कफपैत्तिक रोगों में, यकृत्-विकार, अर्श, उदर रोगों में, रक्त विकार, कुत्ते के विष में इसका स्वरस 10 ग्राम, ज्वर, प्रदर में उपयोगी है।

41. Boerhavia Diffusa Linn. Hogweed. **पुनर्नवा, गदहपुरणा, इटसिट**

Tridoshhar, stomachic, diuretic, diaphoretic, expectorant, cardiotonic, antiinflammatory, Jaundice, calculus, heart diseases, ascities, scanty urine, internal inflammations, antidote to snake venom, diabetes.

शोथहर, त्रिदोषहर, नेत्ररोगों में उरःक्षत, रक्तप्रदर, मूत्रकृच्छ, ज्वर, दौर्बल्य, सर्प, मूसा विषों में प्रयोग होता है।

42. Bryonia Laciniosa Linn. (Diplocyclos Palmatus Jaff). **शिवलिंगी**

Used in ague, enlarged spleen, ague, colic, convulsions, paralysis of tongue, carbuncle, tumour, constipation, sores.

कटु, उष्ण, रसायन, पुत्रदायक, रेचन, दिव्या, ज्वरघ्न, बल्य।

43. Bryophyllum Pinnatum (Lam.) Kurz.

पर्णबीज, पाषाणभेद, जख्मेहयात

(=Kalanchoe Pinnata Pers.)

Bruises, wounds, boils, bites of insects, burns, controls diabetes.

वातपित्तशामक, रक्तस्तम्भक, व्रणरोपण, रक्तप्रदरनाशक, रक्तपित्तशामक, अश्मरीहर, मूत्रकृच्छ्रघ्न।

44. Calotropis Gigantea R. Br. आक, मदार

Calotropis Procera (Ait). R. Br. सफेद आक, अलर्क

In small doses alterative, tonic, diaphoretic, purgative, cures leprosy, leucoderma, ulcers, tumours, piles, diseases of spleen, liver and abdomen.

कटुपौष्टिक, विषघ्न, कैंसर प्रतिरोधी, वेदनास्थापन, व्रणशोधन, कुष्ठघ्न, जन्तुघ्न, शोथहर, श्वासहर, दीपन-पाचन, रक्तशोधक।

45. Capsicum Annuum Linn. Capsicum Frutescens Linn. लाल मिर्च

Carminative, nerve stimulant, rheumatism, rubifacient, antiseptic, Spasmolytic, increases appetite, chronic ulcer, source of vit. C, useful in atonic dyspepsia.

कफवात विकारों में, आमवात, कटिशूल, गृध्रसी, सन्धिवात, अरुचि।

46. Cassia Alata Linn. Ringworm Weed. चक्रमर्द

Leaves are sour, cure vat, antiparasiatic, eczema, ringworm, antifungal, cure for herpes and other skin diseases.

कफ, श्वास, कुष्ठ, दाद आदि के लिये, विरेचक, खुजली, विष आदि का इलाज।

47. Cassia Fistula Linn. Indian Laburinum, Purging Cassia.

अमलतास, आरग्वध

Skin diseases, effective in pyoderma, fruit pulp mild laxative, cures heart diseases.

वातहर, पित्तहर, विरेचन, खुलजी दूर करने वाला, रक्तपित्तहर, हृद्रोगहर।

48. Cassia Occidentalis Linn. Negro Coffee. कासमर्द

Cough, asthma and other respiratory diseases, leaves and seeds useful for skin diseases, ringworm.

कफवातशामक, विसर्प, दाद, व्रण, पित्तविकार, कास-श्वास, उदर रोग।

49. Cassia Tora Linn. Foetid Cassia. पंवाड, चक्रमर्द

All types of skin diseases, carminative, laxative, vermifuge, cures eczema, dermatosis, itching, ulcers, cough, dyspnoea, anorexcia, obesity respiratory ailments.

कफवातशामक, विषघ्न, कफनिःसारक, मेदोहर, त्वचारोग, पक्षाघात।

50. Celastrus Paniculatus Willd. Stafftree. मालकंगनी

Seeds alterative, stimulant, nervine, intellect and memory enhancing, brain tonic, sedative, anticonvulsant, external use relieves rheumatism, gout, paralysis.

कफवातशामक, पक्षाघात, सन्धिवात, कटिशूल, मेध्य, हृदयमन्दता, नाड़ी, बलदायक, शोथहर, मूत्रल।

51. Centella Asiatica (Linn.) Urban Indian Pennywort. मंडूकपर्णी, ब्राह्मी

Nervine, cardio-tonic, improves memory & intellect, useful in dermatosis, cough, diabetes, anaemia, emaciation, insanity, severe headache, eye troubles, skin diseases.

कफपित्तशामक, मेध्य, प्रमेहघ्न, विविध चर्मरोग, आमपाचन, बल्य, वयःस्थापन, हृदय की दर्बलता व इससे होने वाली शोथ, श्वास-कास।

52. Cleome Viscosa Linn. Wild Mustard. हुलहुल, तिलपर्णी

Leaves rubifacient, vasicant, sudorific, heals wounds, ulcers, seeds carminative, vesicant, antiseptic, wormicidal.

कफवातजन्य विकारों में, कर्णशूल, अजीर्ण, उदरशूल, कृमिरोग, गण्डुपद।

53. Coccinia Grandis (Linn.) Voight. कुंदरू, बिम्बी
(=C. Indica W. & A.)
Antidiabetic, alterative, carminative, infective hepatitis, cures earpain.
कफपैत्तिक विकारों में, मधुमेह, चर्मरोग, कामला।

54. Cucumis Momordica Roxb. एरुवारू, फुट
(=C. Melo var. Momordica Drf.)
Ripe fruit causes biliousness, unripe fruit cures cough, biliousness
पित्तहर, वातप्रकोपी।

55. Curculigo Orchioides Gaertn. काली मूसली, तालमूली
Rejuvenative, aphrodisiac, tonic, viriligenic, diuretic, restorative, alterative, piles jaundice, asthma, dysuria, menstrual derangement, leucorrhoea, menorrhagia.
वातपैत्तिक विकारों में, अर्श, कामला, कास-श्वास, चर्मविकार, कृशता, रसायन।

56. Chlorophytum Borivilianum San. & Fer. सफेद मूसली
Ch. Arundinaceum Baker.
Tonic, aphrodisiac, used for general debility, rheumatic and nervous complaints and diabetes.
बल्य, वृष्य, आमवात, सन्धिवात आदि रोगों में, कमजोरी में।

57. Costus Speciosus (Koen. Ex Retz.) Sm. कुष्ठ, दीपन,पाचन, हृद्य
कफवित्तहर, ज्वरघ्न, कास, प्रमेहनाशक।

58. Curcuma Amada Roxb. Mango Ginger. आमाहल्दी
Diuretic, emollient, expectorant, antipyretic, appetiser anodyne, antirheumatic, carminative, cooling, stomachic.
कफपित्तशामक, वातकर, वातानुलोमन, दीपन, पाचन, वेदनास्थापन, शोथहर, सभी प्रकार की खाज-खुजली दूर करने वाली।

59. Curcuma Aromatica Salisb. Wild Turmeric. वनहल्दी

Tonic, stimulant, carminative, useful in leucoderma skin diseases, impurities of blood sprains & bruises.

कफघ्न, पित्तविरेचक, पित्तशामक, वर्ण्य, रक्तदोषहर, चर्मरोग दूर करने वाली, विष नष्ट करने वाली, पाण्डुरोग व खुजली नष्ट करने वाली।

60. Curcuma Zedoaria Rosc. Zedoary. कचूर

Stimulant diuretic, demulcent carminative, expectorant and rubifacient, useful in flatulence, antimicrobial, antifungal, bruises, pain. colds etc.

दीपन, रुचिकर, कफहर, वातहर, मूत्रजनन, कृमिघ्न, श्वासहर, अर्श।

61. Cymbopogon Martinii (Roxb.) Wats. Palmarosa. आज्ञाघास, रोहिष

Oil 0.15 to 0.40% extensively used in perfumery industry.

कफवातशामक, कफनिःसारक, मूत्रजनन, स्वेदजनन, ज्वरघ्न, रोचन, दीपन, रक्तशोधक, पाचन, अनुलोमन, कृमिघ्न, वेदनास्थापन।

62. Cynodon Dactylon (Linn). Pers. दूबघास

Used in dropsy, epilepsy, insanity, syphilis, cuts & wounds,

कटे घावों का खून रोकती हैं, मृगी, पागलपन आदि में प्रयोग होती है।

63. Cyperus Rotundus Linn. Nut Grass. मोथा, मुस्तक

Indigestion, sprue, diarrhoea, demulcent, nervine tonic, diaphoretic, anthelmintic, vermifuge, galactagogue.

पित्तकफशामक, वातवर्धक, अरुचिहर, रक्तपित्तहर, दीपन, पाचन।

64. Datura Metel Linn. Thorn Apple. काला धतूरा

Germicidal, anodyne, narcotic, sedative, antiseptic,

कफवातशामक, वेदनास्थापन, श्वासहर, शोथहर, त्वग्दोषहर, अम्लपित्त, वृक्कशूल।

65. Desmodium Gangeticum DC. शालपर्णी

Antipyretic, anticatarrhal, hazyvision, dysentery, cardiotonic, laxative, diuretic, nervous tonic, snake bite.

त्रिदोषज विकारों में, नाडीदौर्बल्य, वातव्याधि, अग्निमांद्य, अर्श, उरःक्षत।

66. Digitalis Purpurea Linn. Foxglove. तिलपुष्पी, डिजिटेलिस

Cardiac complaints, kidney diseases, urinary suppression, dropsy, cardictonic, acro-narcotic poison in large doses.

कफवातशामक, हृदय के अनेक रोगों में, कास-श्वास, हृद्दौर्बल्यजन्यशोथ।

67. Dioscorea Bulbifera Linn. वाराही कन्द

Tubers used in diabetes, intestinal worms, skin diseases, general tonic.

त्रिदोषज विकारों में, अग्निमांद्य, कृमि रोग, रक्त विकार, दौबर्ल्य, प्रमेह, चर्म विकारों में।

68. Dolichos Biflorus Linn. Horsegram. कुलथ

Diuretic, antipyretic, anthelmintic, tonic, abdominal complaints, asthma enlarged liver and spleen, stones from kidney, piles, eye diseases, inflammation.

शूलहर, नेत्रों के लिये हितकर, वातकफशामक, पथरी को दूर करने वाला।

69. Echinops Echinatus Roxb. Globe Thistle, Camel Thistle. ब्रह्मदण्डी, ऊँटकटारा

Alternative, diuretic, nerve tonic, hoarse cough, hysteria, dyspepsia, opthalmia, scrofula.

कफवातहर, रुचिकर, दीपन, पौष्टिक, वृष्य, मेहघ्न, रक्तशोधक।

70. Eclipta Alba Hassk. भृंगराज, भांगरा

Rejuvenator, good for hair and skin, expels intestinal worms, cures cough and asthma, strengthnes, body, jaundice.

कफवातहर, केश्य, चक्षुष्य, रसायन, चर्मरोगहर, नेत्ररोगहर, कामला।

71. Eupatorium Purpureum Linn.(=E. Ayapan) Gravel Weed. अयापान

कफपित्तशामक, रक्तरोधक, व्रणशोधन, विषघ्न, प्रतिश्याय, चर्मरोग।

72. Elephantopus Scaber Linn. हस्तिपत्ता, गोजिह्वा

Cardiac tonic, diuretic, alterative, febrifuge.

पित्तहर, सर्वविषहर, दन्तरोगघ्न, विषघ्न, रक्तपित्तहर, व्रणरोपण।

73. Evolvulus Alsinoides Linn. विष्णुक्रांता, शंखपुष्पी

Bitter tonic, alterative, antispasmodic, antiphlogistic, powerful brain stimulant, insanity, epilepsy etc.

दीपन, अनुलोमक, रसायन, मेध्या, वृष्य, मानसरोगहर, स्मृति कान्ति देने वाली।

74. Gloriosa Superba Linn. कलिहारी, लांगली

A good abortifacient, anthelmintic, germicidal, cures leprosy, swelling, piles, chronic ulcer, colic pain in bladder, snake bite, scorpion sting etc.

कफवातशामक, दीपन, बल्य, पित्तसारक, गर्भनाशन, अर्शोघ्न, कृमिघ्न, जन्तुघ्न, व्रणहर, शोथहर, वस्तिशोधक, रसायन, रक्तशोधक।

75. Glycyrrhiza Glabra Linn. Liquorice. मुलेठी, जेठीमधु, यष्टिमधु

Demulcent, expectorant, antitussive, laxative, Sweetener, refrigerant, tonic, alterative, sore throat, good for eyes, antiinflammatory agent in peptic ulcer, adrenal agent, antidiuretic.

वातपैत्तिक विकारों में, व्रणशोथ व विषों में, आमवात, बुद्धिवर्धक, वातानुलोमन, अम्लपित्त, रक्ताल्पता, रक्तपित्त, कास-श्वास, स्वरभेद, शुक्रमेह, चर्मरोगों में।

76. Hedychium Spicatum Buch. Ham. Ex Smith. कपूर कचरी, शटी

Useful in inflammations, asthma, pains, foul breath, hiccough, bronchitis, tonic to brain, carminative, stomachic, vomiting,

कफवातिक विकारों में, सन्धिशोथ, मुखदुर्गन्ध, बाल झड़ने में, अरुचि, रक्तविकार, कास-श्वास, तमक-श्वास, प्रतिश्याय, हिक्का, ज्वरों में।

77. Hibiscus Cannabinus Linn. Kenaf Mesta. पटसन

Fibre Crop, leaves purgative, juice of flowers with sugar and black pepper useful for constipation accompanied by acidity.

कफपित्तहर, विरेचक, रुचिकर, हृद्य, गले के रोग मिटाने वाली, अतिसारनाशक।

78. Hibiscus Rosa - Sinensis Linn. Shoe flower. जपा कुसुम

Flowers are demulcent, emollient, refrigerant, constipating, hypoglycaemic, aphrodisiac, used in alopacia, burning sensation in body, diabetes, piles etc.

कफपित्तशामक, अर्शोहर, केश्य, विषहर, हृद्य, खालित्य-पालित्य, उन्माद, हृद्रोग, रक्तप्रदर, प्रमेह, मस्तिष्क-दौर्बल्य, रक्तपित्त, केश बढ़ाने में।

79. Holarrhena Antidysentrica (L.) Wall. कुटज

पेचिश की प्रसिद्ध दवा।

80. Hygrophilla Spinosa T. And. (=H. Auriculata Heine) कोकिलाक्ष, तालमखाना

Reputed remedy for arthritis, aphrodisiac, bladder stones, oedema etc.

पित्ताश्मरी, वृष्य, बल्य, रुचिकर, कफहर।

81. Hypericum Perforatum Linn. St. John's Wort. वसन्त

Sedative, used for depression, sciatica, wounds etc.

मानसिक अवसाद दूर करने वाली दवा।

82. Ichnocarpus Frutescens R. Br. Black Creeper. कृष्णा सारिवा

Bleeding gums, convulsions, cough, delirium, dysentery, glossites, haematuria, measles, night blindness, urinary calculi, anorexia.

त्रिदोषज विकारों में, ग्रहणी, वातरक्त, आमवात, पैत्तिक प्रमेह, दौर्बल्य, पाण्डु, शोथ।

83. Ipomoea Hederacea (Linn.) Jacq. (=I nil (L.)Roth). काला दाना

Seeds purgative, anthelmintic, blood purifier.

कफवातिक रोगों में, चर्म रोग, विबन्ध, कृमिरोग, आमवात, वातरक्त।

84. Justicia Gendarussa Linn. (=Gendrussa Vulgaris Nees).

काला वासा

Lung diseases, dyspepsia, tympanitis, inflammations, dislocated bones or fractures, facial paralysis.

कफपित्तविकार, आमवात, व्रणशोथ, रक्तविकार, कास-श्वास, चर्मविकार।

85. Kalanchoe Pinnata Pers. (=K. Laciniata DC).

पर्ण बीज, पाषाणभेद,

(=Bryophyllum Pinnatum Kurz.)

Bruises, wounds, boils, bites of insects, diabetes, burns.

वातपैत्तिक रोगों में, अभिघातजन्य शोथ में, रक्तप्रवाहिका, रक्तार्श, रक्तप्रदर।

86. Lagenaria Siceraria Standl. Bottle Gourd. लौकी (कदु) इक्ष्वाकु

(=L. Vulgaris Seringe)

Cooling, cardiotonic, cures oedema, pain, ulcers, cough, asthma

कफपैत्तिक रोगों में, कामला, वमन व रेचन के लिए, रक्तविकार, शोथ, विष।

87. Lavandula Angustifolia Mill. French Lavender.

कफवातिक विकारों में, मेध्य, मानसिक दुर्बलता, कमजोर हाजमा, अपस्मार।

88. Lawsonia Inermis Linn. मेंहदी

Leaves in bruises, sprains. burns, inflammations, headache; decoction of bark, leaves, flowers in epileptic fits, leaves used to colour hair, hands, nails etc.

कफपित्तजन्य रोगों में, केश्य, रक्तस्तम्भन, शोथहर, दाहप्रशमन, व्रणरोपण हाथ व केश रंगने के लिए।

89. Leucas Aspera (Willd.) Link. **द्रोणपुष्पी, गूमा**
(= Leucas Cephalotes Spreng.)
Leaf juice in psora, chronic skin eruptions, epilepsy, poisons, snake bite, antipyretic, insecticidal, wormifuge, jaundice.
कफवात विकारों में, जन्तुघ्न, विषघ्न, दीपन, अनुलोमन, रक्तशोधक, पित्तसारक।

90. Luffa Acutanguta Roxb. Ridge Gourd.
काली तोरी, झिंगा, कोशातकी
Demalcent, diuretic, bitter tonic, nutritive, Leaf juice in granular conjunctivitis.
कफपैत्तिक विकारों में, गुल्म (उदर), कास-श्वास, पाण्डु, रक्तविकार, विषों में।

91. Mimosa Pudica Linn. **लज्जालु, नमस्करी, लज्जावन्ती, छुईमुई**
Cooling, antiseptic, alterative, resolvent, carminative, blood purifier, scorpion sting, antiseptic, bleeding.
कफपित्तज विकारों में, क्षत, व्रण, उरःक्षत, रक्तपित्त, प्रदर, प्रवाहिका, प्रमेह।

92. Mucuna Pruriens (Linn.) DC. Cowhage. **कौंच, आत्मगुप्ता**
(=M. prurita Hook)
Seeds aphrodisiac, nervine tonic, alexipharmic, cure scorpion sting; leaves anthelmintic, aphrodisiac, tonic.
वातज-विकारों में, गण्डूपद, कृमि (Round Worms) के लिये फलियों का रोम गुड़ व मक्खन मिलाकर, बीज दौर्बल्य, कृशता, नाड़ी दुर्बलता में।

93. Oxalis Corniculata Linn. Indian Sorrel. **चांगेरी, खट्टी बूटी**
Useful in dysentry, dyspepsia, fever, scurvey, piles, rheumatism, diarrhoea and nervous complaints.
इसमें पोटाशिय और ऑक्जेलिक एसिड होता है। उष्ण, कफवातशामक, मदनाशक, रोचन, दीपन, यकृत्-उत्तेजक, रक्त स्तम्भक, लेखन, शोथहर, वेदनास्थापन, दाह प्रशमन, त्वचा के रोगों में, रक्तस्राव।

94. Origanum Majorana Linn. Sweet Majoram. मरूवक
(=O. hortensis Moench.)
Excellent for sprains, bruises, tonic to liver, carminative.
दीपन, रुचिकर, रक्तदोष, विषहर, हृद्य, पित्तकर, खुजली दूर करने वाला।

95. Operculina Turpethum (Linn.) Silva Manso. निशोथ
Root purgative, useful in meloncholia, rheumetic, paralytic, hepatic stimulant, ulcer, skin diseases.
अतिस्थौल्य, वातरक्त, आमवात, शोथ, कामला, अर्श।

96. Ocimum Gratissimum Linn. रामतुलसी
Used in rheumatism, paralysis, skin diseases.
कफवात विकारों में, प्रतिश्याय, वातहर, दुर्गन्धनाशक, दीपन-पाचन।

97. Plumbago Indica Linn. Fire Plant. लाल चित्रक
Reputed remedy for leucoderma and other skin diseases, Root is alterative, gastric stimulant, appetiser, vesicant.
रसायन, रुचिकर, शोथहर, अर्शोघ्न, कुष्ठघ्न, अल्पमात्रा में कटुपौष्टिक।

98. Plumbago Zeylanica Linn. Ceylone Leadwort. चित्रक
Abortizacient, vesicant, diuretic, caustic, expectorant, appetiser, skin diseases, dyspepsia, anasarca, piles.
कफवातजन्य विकारों में, श्लीपद, शोथ, सफेद कुष्ठ, चर्म विकार, वातव्याधि, अग्निमान्द्य, यकृत्-विकार, दीपन-पाचन, अर्श, जीर्ण प्रतिश्याय, रसायन, नाड़ी दौर्बल्य।

99. Rubia Cordifolia Linn. Indian Madder. मंजीठ
Efficient blood purifier & healing diabetic wounds, widely used against blood, skin and urinary diseases, alterative antiseptic, tonic, useful in ear, eye diseases, ulcers, swelling.
कफपैत्तिक विकारों में, चर्मरोगों में, आमदोष, अतिसार, रक्तविकार, रजोरोध, वर्ण्य, बल्य, रसायन, विषघ्न।

100. Ruta Graveolens Linn. Garden Rue, Ruta. सुद्दाब, सिताब

Resolvent, emmengogue, diuretic, stimulant, antispasmodic, useful in hysteria, ammenrrhoea, earache, toothache.

कफवातशामक, पित्तवर्धक, जन्तुघ्न, आक्षेपहर, आर्तवजनन, अपस्मार, शोथ।

101. Rumex Vesicarius Linn. Sorrel, Bladder Dock. चूका, अम्लवेतस

Astringent, sedative, used in lymphatic and glandular system, chronic skin eruptions, scurvy, stomachic, alcohdism.

अग्निदीपन, उष्ण, रुचिकर, रोचन, पाचन, भेदन, दाहहर, विषहर, वेदनास्थापन।

102. Sida Acuta Burm. वरियारा, खरेंटी, महाबला

(=S.Carpinifolia L.)

Cooling, bitter tonic, used in nervous and urinary complaints, chronic bowel complaints, blood & bite disorders, aphrodisiac.

धातुवृद्धिकर, बल्य, वृष्य, त्रिदोषहर, हृदयरोग और दाहहर, वातार्श, वेदनाशामक।

103. Sida Cordifolia Linn. कंघी, बला

Bleeding piles, strangury, chronic dysentry, leucorrhoea, cardiac.

बला जड़ यक्ष्मा, रक्तपित्त, वातरक्त, बहुमूत्र, फोडा, खून व यकृत रोग, बल-वीर्यवर्धक, शोथहर, वात को दूर करने वाली, स्नायुतन्त्र रोग।

104. Solanum Indicum Linn. Indian Night Shade. वृहती

(=Solanum anguivi Lam.)

Bitter, stimulant, digestive, anthelmintic, carminative, diaphoretic, expectorant; fruits digestive, laxative, alopecia.

कफवातिक विकारों में, हृदय-दुर्बलता, शोथ, रक्तविकार, अश्मरी, चर्मरोग।

105. Solanum Nigrum Linn. Black Night Shade. काकमाची, मकोय

Used in consumption, cough, skin diseases, rheumatism, gout, chronic enlargement of liver, ear & eye diseases, effect of old age. Sedative, alterative, diaphoretic, expectorant, emolient.

त्रिदोषजन्य रोग, मुख, गले, नाक, नेत्र व कर्ण रोगों में, यकृत्-विकार, हृदय रोग, शोथ, वातरक्त, आमवात, हिक्का, श्वास-कास, वृक्करोग, चर्मरोग, बल्य।

106. Solanum Xanthocarpum Schrad. &Wendl.
कंटकारी, छोटी कटेरी, भटकटैया

(=S. Surratense Burm. &.)

Astringent, stimulant, aperient, diuretic, digestive, laxative cardiotonic, expactorant, alterative, asthma, pain in chest.

कफवातिक रोगों में, अग्निमान्द्य, रक्तचाप, रक्तविकार, श्वास-कास, प्रतिश्याय, मूत्रकृच्छ्र, चर्मरोग, ज्वर।

107. Sphaeranthus Indicus Linn. गोरख मुण्डी, मुण्डी

Laxative, alterative, aphrodisiac, tonic, deobstruent, used in bronchitis, tumours, nervine ailments, bladder stone.

त्रिदोषज विकारों में, शोथ वेदनायुक्त रोगों में, अपस्मार, वातव्याधि, शिरःशूल, श्लीपद, जीर्ण कास, मूत्रकृच्छ्र, कुष्ठ, विसर्प, दौर्बल्य, ज्वर।

108. Taraxacum Officinale Weber Ex Wiggers. दुधली

कफपित्तहर, जीर्णव्रण, कामला, यकृत्-वृद्धि, रक्तविकार, शोथ, विषों में, चर्मरोग।

109. Tephrosia Purpurea (L.) Pers. Wild Indigo. शरपुखा, सरफोंका

कफवात विकारों में, शूल, विबन्ध, यकृत्- विकार, प्लीहा-वृद्धि, कष्टार्तव, मूषक तथा धातुज विषों में, चर्मरोगों में।

110. Uraria Picta Desv. पृश्निपर्णी, पिठवन

Has fracture healing properties, used in heart troubles.

त्रिदोषनाशक, वृष्य, वातानुलोमन, रक्तातिसार, दाहहर, ज्वर, श्वास को दूर करने वाली।

111. Trichosanthes Cucumerina Linn. Wild Snake Gourd.
तिक्त पटोल

Cardiac tonic, alternative, febrifuge, useful in boils and intestinal worms.

पाचन, अग्निदीपन, पित्तनाशक, वृष्य, कफनाशक।

112. Tylophora Indica (Burm.&.) Merr. **अनन्तमूल**
(=T. Asthmatica W.C.A.)
Leaf decoction useful in dysentry, asthma and bronchitis.

113. Vernonia Cinerea Less. Purple Fleabane. **सहदेवी**
Febrifuge, diaphoretic, alterative, elephantiasis.
कफवातज विकारों में, रक्त विकार, श्लीपद, जीर्ण ज्वर, सिरदर्द, अश्मरी।

114. Vitex **Negundo Linn.** **निर्गुण्डी, सम्भालु**
Stomachic, germicidal, cures cough, asthma, fever, eye diseases, inflammatory, glandular & rheumatic swelling, ulcers, skin diseases, nervous disorders.
कफवात-जन्य विकारों में, सन्धि शोथ, आमवात, आमदोष, रसायन, कास।

115. Viola Odorata Linn. **वनफसा**
वातपित्त रोगों में, जन्तुघ्न, रक्तशोधक, वेदनाशामक, कास-श्वासहर।

116. Withania Somnifera (L.) Dunal. **अश्वगन्धा, असगन्ध**
Sedative, tonic, stimulant, aphrodisiac, used in child marasmus (malmutrition), deobstruent.
कफवातज विकारों में, भ्रम, अनिद्रा, रक्तभाराधिक्य, क्षय, शोथ, वालशोष।

117. Xanthium Strumarium Linn. Cocklebur. **छोटा गोखरू**
Diaphoretic, sedative, suderific, sialgogue, fruit cooling, demulcent.
पसीना लाने वाला, मूत्रजनन, शोथहर, शामक।



(ग) सर्दी के मौसम में होने वाले पौधे

118. Anethum Sowa Roxb. Ex Flem. Indian Dill, Sowa.

सोया, शतपुष्पा

(=Anethum Gravdedens L.Var. Sowa Roxb=A. Gravedens DC)
Seeds are acrid, bitter, digestive, carminative, stimulant, stomachic, anthelmintic, galactagogue, diuretic and emmengogue.

पित्त बढ़ाने वाली, वेदनास्थापन, दीपन, शोथहर, मूत्रल, पाचन, व्रणपाचन।

119. Ageratum Conzoides Linn. Goatweed. विषमुष्टी, ओसारी

Leaves styptic, antidysentric; useful in piles, boils, wounds, sores and in ague. Flower buds heal cancerous growth.

कफवातहर, रक्तपित्तशामक, ज्वरघ्न, रुचिकर, दीपन ।

120. Argemone Maxicana Linn. Mexican Prickly Poppy.

स्वर्णक्षीरी, सत्यनाशी

Anthelmintic, diuretic,antidote, antileprotic, tonic, used in chronic skin diseases.

पित्तकफनाशक, भेदनीय, विरेचक, मूत्रल, विषघ्न, अश्मरीहर, कृमिघ्न।

121. Brassica Campestris Linn. सरसों, सर्षप

Var. brown sarson, Var. yellow sarson
Stimulant, diuretic, emetic, chilblains etc.

कफवातनाशक, मूत्रजनक, दीपन, विदाही, कृमिघ्न।

122. Brassica Juncea (Linn.) Czern & Coss. राजिका, राई आसुरी

Indian Mustard, Laha, Mohari
Useful in inflammatory conditions of lungs, liver, bronchii etc.

कफवातहर, कण्डुनाशक, कृमिघ्न, रक्तपित्तकारक, शोथहर, अजीर्ण।

123. Cichorium Intybus Linn. Endive, Chicory. कासनी

Increases bile secretion, promotes digestion, stomachic, tonic in large doses, diuretic, carminative, checks enlargement of spleen.

कफपित्तहर, शोथहर, दाहप्रशमन, यकृत्-उत्तेजक, पित्तसारक, निद्राजनन, कटुपौष्टिक।

124. Lepidium Sativum Linn. Garden Cress. हालिम, चन्द्रशूर, हालों

Useful in bleeding piles, cough, asthma and bone fracture.

कफवातशामक, जन्तुघ्न, वेदनास्थापन, वातानुलोमन, रक्तशोधक, कफनिःसारक बल्य, कटिशूल, संधिवात।

125. Linum Usitatissmum Linn. Flax. तिसी, अलसी, अतसी

Seeds demulcent, laxative, useful in (as poultice) gouty and rheumatic swellings, abscesses, boils, inflamed surfaces etc.

वातविकारनाशक, कास-श्वासहर, कामोत्तेजक, व्रणशोथ आदि।

126. Sisymbrium Irio Linn. Hedge Mastard. खूबकलाँ

Seeds expectorant, carminative, tonic, diaphoretic.

वातशामक, कफनिःसारक, शोथहर, वेदनाशामक, वातानुलोमन, बल्य।

127. Trachyspermum Ammi (L.) Sprague. अजवायन, यवानी

Carminative, digestive stimulant, relieves colic pain, dyspepsia.

कफवातशामक, पित्तवर्धक, हृदयोत्तेजक, श्वासहर, शीतप्रशमन, विषघ्न।

128. Trichodesma Indicum R. Br. अधःपुष्पी, अन्धाहुली

Antidote, Antipyretic, diuretic, carminative, good for eyes.

कफवातजन्य विकारों में, शोथहर, चर्मरोग, विषघ्न, चक्षुष्य, मूत्रल, दीपन।

129. Trigonella Foenum-Graecum Linn. Fenugreek. मेथी

Seeds are aperient, diuretic, suppurative, emmengogue, carminative, tonic, antipyretic.

विशेषतः वातरोगों में, नाड़ीदौर्बल्य, कोष्ठगतवात, रक्तपित्त, पीड़ा, शोथ, कमजोरी।

(घ) बहुवर्षायु पौधे

130. Abroma Augusta Linn. F. Devil's Cotton Tree.

पिशाच कपास, उलट कम्बल

Utrine tonic, cure for congestive and nervous dysmenorrhoes, ammenorrhoea, sterility and other menstrual disorders.

गर्भाशय विशिष्ट क्रिया से रजोरोध, कष्टार्तव और अनियमित ऋतुस्राव में अतीव लाभप्रद।

131. Acacia Catechu Willd. खदिर, खैर

Source of Katha, which is astringent, digestive and useful in ailments of throat, mouth, gums, cough, diarrhoea.

कफपित्तशामक, रक्तप्रसादन, रक्तस्तम्भन, रक्तवर्धक, मेदोधातुशोषक, कण्डुघ्न।

132. Adhatoda Vassica Nees.

वासा, वासक, अडुसा, वांसा

(=Justicia adhatoda Linn.)

Reputed cure for cough, cold, bronchitis, respiratory disorders.

कफपित्त विकार, रक्तपित्त, रक्तविकार, कास-श्वास, चर्म-विकार आदि।

133. Adina Cordifolia Benth & Hook. F. हल्द, हल्दू

(F.Rubiaceac)

कुष्ठघ्न, वर्ण्य, व्रणशोधन, व्रणरोपण, दीपन, आमपाचन, कटुपौष्टिक।

134. Aegle Marmelos Corr. बिल्व, बेल

Useful in stomach pain, constipation, dysentry, nausea, cholera, diarrhoea, cramps, night fever.

पत्र शोथहर, वेदनास्थापन, कच्चाफल दीपन, पाचन, ग्राही, पकाफल मृदु विरेचन है।

135. Aerva Lanata Juss. गोरक्षगंजा, अश्मरीभेद, कपूरीमधुरी

Diuretic, lithontriptic, and useful in diabetes, urinary stones (lithiasis), flowers useful in kidney stone.

मूत्रल, अश्मरीभेदन, कफवातशामक।

136. Albizzia lebbec Benth. शिरीष, पीत सिरस

Useful in snake bite, scorpion sting; flowers used in chronic cough, bronchitis, asthma, bark strengthens,gums.

विषहर, वातहर, चर्मरोग, व्रणशोधन, विसर्पनाशक।

137. Alstonia Scholaris R. Br. Devil's Tree. सप्तपर्ण, छातिम

Used in headache, pain in legs and loins, rheumatism, cholera, bronchitis, haemoplegia, pleurisy, asthma.

व्रणशोधन-रोपण, विषमज्वरघ्न, उदर्द, कटुपौष्टिक, जीर्णव्रण।

138. Argyreia Specioosa Sweet. समुद्रशोष, विधारा, धावपत्ता

Used as antiviral and in skin diseases.

कफवातशामक, मेध्य, नाड़ीबल्य, व्रणपाचन, आमपाचन, रसायन।

139. Azadirachta Indica A. Juss. Margosa. निम्ब, नीम

Useful in skin diseases, reduces dental caries & inflamanation of mouth, leaf delays clotting time, used insecticide, antiviral, diuretic, swellings, scabies, ringworm.

कफपित्तनाशक, जन्तुघ्न, व्रणशोधन, व्रणपाचन, कफघ्न, आमपाचन, चक्षुष्य।

140. Bauhinia Variegata Linn. कचनार

Useful in various glandular diseases and as poison antidote Bark of roots useful in flatulence, dyspepsia. flowers lexative, flower buds in piles, cough haematuria.

141. Terminalia Belliric Roxb. विभीतक, बहेड़ा

त्रिदोषजन्यविकारों में, विशेषतः कफविकारों में, वातव्याधि, अनिद्रा ।

142. Butea Monosperma (Lam.) Kuntze. पलास, ढाक, किंशुक

Very useful in vaginal diseases, hoemerrhages, worms.

कफवातशामक, यकृत्-उत्तेजक, बीज विषघ्न, संधानीय, पुष्प रक्तस्तम्भन, रसायन (पञ्चाङ्ग)।

143. Caesalpinia Bonducella Flemming. Fevernut, Physicnut. कण्टकरञ्ज, लताकरञ्ज

(=C.Rista L.)

Bitter, germicidel, febrifuge, emmengogue, useful in Liver disorders, inflammatory swellings.

शोथहर, वेदनास्थापन, कफघ्न, रक्तशोधक, विषमज्वरघ्न, अर्श।

144. Callicarpa Macrophylla Vahl. प्रियंगु, गन्धफली, कंगु

Leaves useful in rheumatism and gout, oil from root is aromatic and stomachic; flowers and fruits bitter, sweet astringent, anodyne, digestive, constipating and febrifuge.

त्रिदोषशामक विशेषकर वातपित्तशामक, वेदनास्थापन, रक्तपित्तशामक, विषघ्न, कटुपौष्टिक, स्तम्भन, अनुलोमन, रक्त-विकार।

145. Carica Papaya Linn. Papaya एरण्ड कर्कटी, पपीता

Leaves tone heart, are diaphoretic and diuretic; ripe fruit stomachic, carminative, juice of unripe fruit very digestive, antipruritic, ulcer healer, cures freck less blamishes.

कफवातशामक, पकाफल पित्तशामक, कच्चेफल से अग्निमान्द्य, ग्रहणी, यकृत्-वृद्धि, प्लीहा-वृद्धि, अर्श आदि ठीक होती है। वातविकारों में बीज उत्तम, विषघ्न, बल्य।

146. Cassia Fistula Linn. Purging Cassia, Indian Laburnum. अमलतास, आरग्वध

Skin diseases, respiratory problems, improves digestion clears throat and purifies blood. Leaves, roots & seed pulp mild laxative, flowers cure kapha & biliousness.

वातपित्तशामक, मृदुविरेचन, शोथहर, रक्तशोधक, हृद्य, कफ निःसारक, दाहप्रशमन।

147. Clerodendrum Serratum (Linn.) Moon. **भारङ्गी**

Antispasmodic, carminative, expactorant, febrifuge, tonic.

कफवातशामक, शोथहर, व्रणपाचन, आमपाचन, कास-श्वास, प्रतिश्याय, रक्तविकार।

148. Cordia Dichotoma Forst. F. **लसोड़ा, श्लेष्मातक, उद्दालक**

(=Cordia Myxa Roxb.)

Uricaria, anasaraca, cholera, dropsy. dysentry.

वातपित्तशामक, विषघ्न, रोपण, कफपित्तशामक, रक्तपित्तशामक, कटुपौष्टिक।

149. Crataeva Nurvala Buch.-Ham. Holy Garter Pear. **वरूण**

Useful in calculus, baldness, sores, hydrocele, diuretic,

कफवातशामक, पित्तवर्धक, पित्तसारक, अश्मरीभेदन, मूत्रल, संक्रमण प्रतिरोधी।

150. Echinops Echinatus Roxb. Globe Thistle. **उण्टकटारा, ब्रह्मदण्डी**

Alterative, nervetonic, diuretic, useful in hoarse cough, hysteria, ophthalmia, scrofula, dys pepsia.

कफवातहर, वृष्य, पौष्टिक, मूत्रकृच्छ्रहर, रक्तदोषघ्न, दीपन, तृष्णाहर।

151. Embelia Ribes Burm.&. Embelia. **वायविड़ंग, विड़ंग**

Fruits carminative, anthelmintic, alterative, cures dental, oral and throat troubles, skin diseases and chest troubles.

कफवातशामक, मस्तिष्क व नाड़ियों के लिये बल्य, कृमिघ्न, वर्ण्य, दन्तशूल, वातरोग।

152. Emblica Officinalis Gaertn. Emblic Myrobalan

आमलकी, धात्री, आँवला

Adaptogen, antipeptic ulcer, antihyperacidity, rich in vit.C

त्रिदोषहर, मेध्य, नाड़ीबल्य, चक्षुष्य, केश्य, वृष्य, दाहप्रशमन, रसायन।

153. Erythrina Indica Lamk. Indian Coraltree.
पारिभद्र, मन्दार, कण्टकी-पलाश

Bark destroys pathogenic parasites, cures oedema, flatulence, arthritis anthelmintic, carminative, expectorant, galactagogue.

कर्णरोगघ्न, आक्षेपहर, निद्राजनन, रक्तप्रसादन, कृमिघ्न, मेदोनाशक, कासहर।

154. Eupatorium Purpureum Linn. Gravel Weed.
अजापर्ण, आयापान

(=E.Triplinerve Vahl.=E.ayapana Vent.)
Diuretic, diaphoretic, antiscorbutic, cathartic, foul ulcers, snake bite, wounds, burns etc.

कफपैत्तिक विकारों में, रक्तरोधक, विषघ्न, रक्तशोधक, कटुपौष्टिक, दीपन-पाचन।

155. Ficus Palmata. Fig. जंगली अंजीर

पके फल वातपित्तशामक, मृदु-विरेचक, रक्तपित्तहर, बल्य, बृंहण, वर्णविकार।

156. Ginkgo Biloba Linn. Living Fossil Tree Maiden Hair Tree.

Seeds vasodilator, antiasthmatic,sedative, Leaves insecticide, cures cerebral blood supply.

157. Gmelina Arborea Linn. Cashmere Tree. गम्भारी, कासमारी

Ingradient of dashmoola, bitter tonic, stomachic, cardio tonic, nervine tonic, laxative, overcomes giddiness, emaciation.

त्रिदोषशामक, मेध्य, वेदनास्थापन, रक्तपित्तनाशक, फल हृद्य व संधानीय बृंहण, रसायन, बल्य, उरःक्षत में लाभकारी।

158. Helicteres Isora Linn. East Indian Screw Tree. मरोड़फली

Root bark uterine tonic, useful in congestive & nervous dysmenorrhoea, ammenrrhoea, sterility and other menstrual disorders.

स्तम्भन, रक्तरोधक, कफपैत्तिक विकार, प्रवाहिका, व्रणरोपण।

159. Holarrhena Antidysentrica (Roxb. Ex Fleming) Wall.

कुटज, कुड़ा कलिंगा

All parts cure dysentry and diarrhoea and is useful in dysuria, urinary and skin ailments, bad ulcers, nausea, vomiting, pruritis.

दीपन, स्तम्भन, अर्शोघ्न, धातुशोषण, व्रणरोपण, अमीबिक प्रवाहिका नाशक, ज्वरघ्न, कफपित्तशामक।

160. Litsea Glutinosa (Lour.) C.B. Robins. मेदासक, मैदालकड़ी

वातशामक, छाल व तैल (बीज) शोथहर, वेदनास्थापन, आक्षेपहर।

161. Madhuca Indica J.F.Gmel. Butter Tree. मधूक, महुवा

Bark benficial in rheumatism, itches, bleeding & spongy gums, tonsilitis, diabetes mellitus, ulcers; flowers & seed oil useful.

वातव्याधि, चर्मरोग, बल्य, बृंहण, नाड़ी-दौर्बल्य, वेदनास्थापन, रक्तपित्तशामक।

162. Mallotus Philippinensis Muell.-Arg. कंपीलक, कमीला

Kamila powder highly beneficial for expelling intestinal worms in old and children and useful in freckles, ringworm and fruit useful in urinary calculus.

कफवातशामक, कुष्ठघ्न, व्रणशोधन, व्रणरोपण, रेचन, कृमिघ्न, अश्मरीभेदन।

163. Melia Azadirachta Linn. Persian Lilac, Bead Tree.

महानिम्ब, वकायन, द्रेक

Wormicidal, used in skin ailments, fruits useful in piles.

रक्तशोधक, पीड़ाशामक, व्रणशोधन, अर्शोघ्न, कृमिघ्न, अर्श में वकायन फल की मज्जा प्रयोग की जाती है।

164. Moringa Oleifera Lam. Drum Stick, Horse Radish Tree.

शिग्रु, शोभांजन, सहिजन

Useful for heart, eye troubles, improves digestion & appetite, cardiac & circulatory tonic, chronic rheumatism.

शोथ वेदना प्रधान विकारों में, पक्षाघात, नाड़ी-दौर्बल्य, हृद्दौर्बल्य, मेदोरोग।

165. Myrica Nagi Thunb. Box Myrtle, Bayberry कटफल, कायफल
(=Myrica Esenlenta Buch-Ham)
Bark resolvent, carminative, tonic, antiseptic, useful in cough, ashthma.
कफवातजन्य विकारों में, छाल तीव्र छींक देने वाली, संधानीय, शोथहर, कफ निःसारक।

166. Nerium Indicum Mill. Indian Oleander. Rose laurel
करवीर, कनेर, अश्वमारक
Leaves and bark cadiotonic, leaves cutaneous eruptions.
हृदयरोग, रक्तविकार, अश्मरी, पत्रभस्म श्वास रोग में लाभप्रद।

167. Opuntia Dillenii Haw. Prickly Pear. नागफनी
(=O.Vulgaris Mill.)
The ripe fruits are good remedy in whooping and spasmodic cough and asthma.
दाहप्रशमन, कफघ्न, हृदयपोषक, दीपन, रोचन।

168. Oroxylum Indicum Vent. Indian Trumpet Flower. श्योनाक, अरलू
An ingradient (rootbark) of Dasamula, bark diaphoretic, used in rheumatism, amoebic dysentry, bitter tonic.
कफवातशामक, शोथहर, वेदनास्थापन, दीपन, पाचन, कटुपौष्टिक, शोथवेदनायुक्त विकारों में, मूत्रल, कफघ्न।

169. Pongamia Pinnata (Linn.) Pierre. करन्ज, नक्तमाल
(=P.Glabra Vent.)
Leaves useful in skin diseases such as eczema, scabies, ulcers and leprosy, flowers as a remedy for diabetes. Oil (seeds) useful in scabies, sores, herpes.
छाल व पत्र जन्तुघ्न, कण्डुघ्न एवं शोथहर, तैल कृमिनाशक, व्रणरोपण, वेदनास्थापन।

170. Premna Mucronata Roxb. अग्निमन्थ, अरनी, गनियार

Used in Dasamula, obstinate fevers, cardiotonic, rheumatismes.

कफवातशामक, शोथहर, वेदनास्थापन, दीपन-पाचन, कटुपौष्टिक, कफघ्न।

171. Pterocarpus Santalinus Linn. F.Red Sanders. लालचन्दन

Mild astringent, cooling and tonic and useful for skin.

कफपित्तशामक, दाहशामक, स्तम्भन, शोथहर, चर्मदोषहर, विषघ्न, शिरःशूल।

172. Punica Granatum Linn. Pomegranate. दाड़िम, दाड़ू

Flowers, bark and fruit rind astringent, stomachic, fruit rind combined with aromatics (Cloves), used in diarrhoea, dysentry.

त्रिदोषघ्न, कफवातशामक (अम्लफल), मेध्य, बलप्रद।

173. Randia Dumetorum Lam. Emetic Nut. मैनफल, मदनफल

Rootbark insecticidal, fruit emetic, carminative, aphrodisiac expectorant, antispasmodic, discutient, anodyne.

कफपित्त-संशोधक, सर्वोत्तम वामक, रक्तशोधक, लेखन, विषघ्न, कफनिःसारक।

174. Ricinus Communis Linn. Castor Oil plant. एरण्ड

Root bark, seeds and leaves purgative, oil useful in rheumatism root decoction beneficial in phlegm, swellings, hernia, pain in wrist, head & bladder.

आमवात, कटिशूल, हृदयशूल, वेदनास्थापन, बल्य, यकृत्, शोथरोग, कफघ्न, शुक्रविकार।

175. Santalum Album Linn. Sandle Wood Tree. चन्दन

Chandan is diaphoretic, diuretic, expectorant, useful in mucous diseases (inflammation of bladder etc.)

दुर्गन्धहर, दाहप्रशमन, वर्ण्य, मेध्य, पित्तशामक, रक्तपित्तशामक, कफनिःसारक।

176. Sapindus Trifoliatus Linn. Soapnut Tree. अरिष्टक, रीठा

Juice of fruit instilled in nostrils to remove fits, emetic.

त्रिदोषघ्न, वामक, रेचन, विषघ्न, रक्तशोधक, लेखन, शोथहर, वेदनास्थापन।

177. Saraca Asoca (Roxb.) Dewillde. अशोक

Uterine tonic, bark decoction used in bowel complaints, pimples, weakness, hoemorrhage, dropsy.

वेदनास्थापन, विषघ्न, रक्तस्तम्भन, रक्तशोधक, अश्मरीनाशक, गर्भाशयरोगहर।

178. Sesbania Grandiflora (Linn.) Pers. अगस्तय, जयन्ती, अगाथी

Bark tonic, leaves aperient, tonic, diuretic, laxative, disinfect mouth, throat when chewed, flowers cure nasal catarrh, headache.

कफपित्तशामक, जन्तुघ्न, विषघ्न, दीपन, ग्राही, कण्ठ्य, रसायन, पत्रशाक बार-बार होने वाला जुकाम दूर करता है।

179. Spondias Pinnata Kurz. Indian Hog Plum. आभ्रतक, अम्बारा

(=S. mangifera Willd.)

Fruit useful in bilious dyspepsia, antiscorbutic.

फल वातहर, भूख बढ़ाने वाला, विटामिन सी का अच्छा स्रोत (37 mg/ 100gm)।

180. Shorea Robusta Gaertn. Sal Tree. शाल, साल

Aromatic oleo-resin is 'Ral/ and is detergent, aphrodisiac, stimulant, useful in dysentry, bleeding piles, weak digestion.

छाल क्वाथ, अमिधात, व्रण आदि वेदना में, अतिसार, रक्तार्श, प्रदर, मेदोरोग।

181. Strychnos Nux-Vomica Linn. Nuxvomica Tree.

विषमुष्टी, कुचला, कुपीलु, विषतिन्दुक

Aphrodisiac, spinal stimulant, respiratroy cardiac stimulant.

कफवातजन्य विकारों में, वातरोगों में, आमदोष, हृदयरोगों (हृदयशैथिल्य, हृदयोदर, हृदय कपाल विकृति आदि), व्रण, अनिद्रा, पक्षाघात, फुफ्फुस-शोथ, दुर्बलता।

182. Symplocos Racemosa Roxb. **लोध्र**

Specific for uterine complaints, useful in elephantiasis, filaria, liver complaints, bowel complaints, eye diseases, spongy & bleeding gums.

कफपैत्तिक रोगों में, चर्मरोग, रक्तस्राव, स्तम्भन, रक्तपित्त, प्रदर, रक्तातिसार।

183. Syzygium Aromaticum (Linn.) Merr. & Perry Clove. **लवंग, लौंग**

Oil 15 to 20 %, stimulant, carminative, useful as carminative, dyspepsia, flatulent colic, toothache, spice, should not come in contact with iron & zinc.

पेटरोग, दन्तशूल, रक्तविकार, कफ की दुर्गन्ध, प्रतिश्याय, आमवात आदि।

184. Tamarindus Indica Linn. Tamarind. **इमली, अमलीका**

Reduce inflammations of ulcers, fruit digestive, carminative, antiscorbutic, antibilous, deranged bile.

रक्तपित्तशामक, त्रिदोषघ्न, दाहहर, अनुलोमक, दीपन-पाचन, रुचिकर।

185. Terminalia arjuna W. & A. Myrobalan **अर्जुन**

Bark cardiotonic, antidysentric, cures wounds, urinary diseases, hypertension, cirrhosis of liver, bone fracture.

रक्तस्राव रोकने के लिये, रक्तरोधक, हृद्रोग, रक्तपित्त, मेदोरोग, विषघ्न।

186. Terminalia Belerica Roxb. Belliric Myrobalan **विभीतक, बहेड़ा**

Fruit bark astringent, tonic, laxative, useful in coughs, hoarseness, eye diseases, piles, dyspepsia, headache.

श्वासनलिकाओं की शोथहर, श्वित्र, चर्मरोग, प्रतिश्याय, कफहर, सामान्य दौर्बल्य।

187. Terminalia Chebula Roxb. Myrobalan **हरीतकी, हरड़**

Fruit digestive, alterative, carminative, laxative, antiseptic.

त्रिदोषहर, वृष्य, हृद्य, शोथहर, वेदनास्थापन, व्रणशोधन, नाड़ीबल्य, रसायन।

188. Tinospora Cordifolia (Willd.) Miers Ex Hook.F. & Thoms.

Valuable tonic, used in fever, joundice, torpiduty of liver, skin diseases, rheumatism etc. Antibacterial, antifungel antiviral, antidiabetic, antirheumatic, antiinflammatory bronchodilator, adaptogen, antihepatotoxic, useful in fractures and acute dental infections.

त्रिदोषशामक, वेदनास्थापन, तृष्णानिग्रह, दीपनपाचन, अनुलोमन, कृमिघ्न, अम्लपित्तहर, रक्तवर्धक, रक्तशोधक, हृद्य, वृष्य, प्रमेहहर, दाहप्रशमन, रसायन।

189. Toona Haxandra (Wall Ex Roxb.) Roemer Red Cedar.

नन्दीवृक्ष, तूनी

(=T.Ciliata Roemer)

Astringent, antiperiodic, tonic, useful in chronic infantile dysentry. Flowers used in menstrual disorders.

ग्राही, बल्य, वेदनास्थापन, गर्भाशयसंकोचक, श्वेतकुष्ठघ्न।

190. Vitex Negundo Linn. निर्गुण्डी, सम्भालु, निशिन्दा

Germicidal, stomachic, digestible, cures cough, asthma, fever, eye diseases, gladular and rheumatic swellings, inflammation, ulcers, skin diseases, nervous disorders, tonic, dispersing swellings, antiseptic.

कफवातशामक, वेदनास्थापन, शोथहर, केश्य, जन्तुघ्न, वातशामक, आमपाचन, कासहर, चक्षुष्य, मूत्रजनन, बल्य, रसायन, कण्डूघ्न, कर्णस्रावनाशक, आमवात, शिरःशूल मस्तिष्क दुर्बलता, त्वचारोग, फुस्फुसावरणशोथ आदि।

191. Woodfordia Fruticosa Kurz. Fire Flame. धातकी, धायफूल

Acrid, cooling anthelmintic, bilious sickness, toxic, uterine sedative, headache, fever, dysentry, diarrhoea.

कफपित्तशामक, रक्तस्तम्भन, जन्तुघ्न, संधानीय, रक्तपित्तशामक, योनिस्रावहर, अतिसार, प्रवाहिका, श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, चर्मरोग, मूत्र साफ करने वाली।

192. Zanthoxylum Americanum Mill. Prickly Ash. तुम्बरू, तेजोवती

Remedy for toothache, anorexia, gastrointestinal diseases, Spleen diseases, antisickling, antimicrobial, anticancer, rheumatism, skin diseases, carminative.

पित्तवर्धक, जन्तुघ्न, कृमिघ्न, दन्तशोधन, दीपन, पाचन, कफघ्न, मधुमेहघ्न, कटुपौष्टिक।

193. Ziziphus Mauritiana Lamk. Jujube बदर, बेर, बदरी

(=Z. Jujuba Lam.)

Root cures kapha, biliousness, headache; leaves cooling cures kapha, diarrhoea and biliousness.

कफकारक, दीपन, अनुलोमन, दाहप्रशमन।



(ङ) हिमालय के ऊँचाई व ठण्डे क्षेत्रों के पौधे

194. Achillea Millefolium Linn. Y arrow, Melfoil. गन्धन, सहस्रपत्री

Aromatic, tonic, stimulant, diaphoretic, antispasmodic, emmenagogue, antiseptic, heart burn, hysteria, epilepsy, antiinflammatory, antiinfective.

वातपित्तहर, पौष्टिक, कासघ्न, अर्शोघ्न, रुचिकर, मूर्छा, मृगी ।

195. Aconitum Heterophyllum Wall. (Ex Royb). अतिविष, अतीस

Beneficial in kapha and pitta and is expectorant corminative antipyretic, antidysentric, antiemetic, antidiarrhoeal.

त्रिदोषहर, कफपित्तशामक, दीपन, पाचन, अर्शोघ्न, कृमिघ्न, आमपाचन, कटुपौष्टिक, मेदोधातु को कम करने वाला, प्रतिश्याय, कास निरोधक।

196. Aconitum Chasmanthum Stapf Ex Holmes.
शृंगी विष, मोहरी, श्याम मोहरी

रसायन, बल्य, वातरोग, कफरोग, शीत (ठण्ड), शोथ, अग्निमान्द्य, श्वास-कास, उदररोग, कण्ठरोग, मधुमेह, सन्निपात हरता है।

197. Aconitum Palmatum D.Don. विख्मा, प्रतिविषा, पतीस

अजीर्ण, पेटदर्द, अजीर्णजन्यवमन, अतिसार, कृमिरोग, जीर्णज्वर, हैजा।

198. Angelica Glauca Edgew. चोरक, चोरा

कफवातविकार, बल्य, मेध्य, दीपन, अनुलोमन, हृद्दौर्बल्य, वातिक श्वास-कास, कृमिघ्न, विषघ्न।

199. Bunium Persicum (Boiss.) Fedtch. कृष्ण जीरक, स्याह जीरा

(=Carum bulbocastanum W. Koch.)

कफवातशामक, दुर्गन्धनाशन, रोचन, दीपन, पाचन, उत्तम वातानुलोमन, हृद्य।

200. Crocus Sativus Linn. Safforon कुंकुंम, केसर, जाफरान

त्रिदोषजन्य विकारों में, वर्णविकारों में, दृष्टिदौर्बल्य में गुलाबजल में घिस कर, मस्तिष्कदौर्बल्यजनित विकारों में, आमवात, रक्तविकार, मूत्ररोग, अजीर्ण आदि।

201. Ephedre Gerardiana Wall. सोम

कफवातजन्य विकारों में, मानसिक अवसाद व वातिक मनोरोग, श्वास रोग।

202. Gentiana Kurroo Royle त्रायमाण, कडू., नीलकंठ

त्रिदाषज विकारों में, रक्तविकार, आमदोष, यकृत्‌विकार, अर्श, उदररोग, चर्मरोग, पाण्डु, ज्वरोत्तर दुर्बलता, कष्टार्तव, विबन्ध, कृमि।

203. Hedychium Spicatum Buch. Ham. Ex Smith. Spiked Ginger Lily कपूर कचरी, कचूर

Root stock acrid, bitter, pungent, astringent, used in foul breath, inflammations, asthma, pains, bronchitis, vomiting. hiccough, blood diseases.

कासघ्न, कफवातशामक, सन्धिशोथ, रक्तविकार, चर्मरोग, प्रतिश्याय, तमकश्वास, मुख दुर्गन्ध, हृदय-दुर्बलता, अरुचि, वमन, उदरशूल, अतिसार।

204. Hypericum Perforatum Linn. St John's Wort वसन्त

Leaf tops: Tranquiliser, antiinflammatory, antidepressant, leaves very effective in wounds and bruises, Hummeriods.

205. Hyoscyamus Niger Linn. Henbane, Hog Bean खुरासानी, अजवायन

Seeds are sedative, useful in asthma, whooping cough.

कफवातिक विकार, शोथहर, वेदनास्थापन, कफघ्न, अश्मरीहर, रक्तस्राव, वात प्रधान उदररोगों में।

206. Origanum Majorana Linn. Sweet Majoram. मरूआ, मरूवक
(=Majorana hortensis Moench or Origanum vulgare Linn.)
Indian sweet Majorana aromatic, carminative, antipyretic, diaphoretic, expectorant.
कफवातजन्य विकार, आमवात, शिरःशूल, दन्तशूल, उदररोग, कृमि, श्वासकास, सामान्य दुर्बलता, रजोरोध, बिच्छूदंश।

207. Peganum Harmala Linn. Harmalla, Isband-Lahauri, Syrian Rue. हरमल, इसबंद
Aphrodisiac, alterative, antiperiodic, stimulant, emimengogue, abortifacient.
पित्तवर्धक, कफवातशामक, वेदनास्थापन, जन्तुघ्न, निद्राजनन, आर्तवजनन, शूल प्रशमन, मादक।

208. Ruta Graveolens Linn. Garden Rue. सिताब, सुद्दाब, सताप
Resolvent, diuretic, emmengogue, antispasmodic, stimulant, acro-narcotic, poison, irritant, abortifacient useful in hysteria and ammenorrhoea.
पित्तवर्धक, कफवातशामक, दीपन, अनुलोमन, कृमिघ्न, आक्षेपहर, कफघ्न, मूत्रल।

209. Picrorhiza Kurrooa Royle Ex Benth. तिक्ता, कटुका, कौड़, कुटकी
Adaptogan, Febrifuge, cholagogue, stomachic, mild laxative, liver ailments, jaundice, antispasmodic, bronchial asthma.
कफपित्तहर, रोचन, दीपन, यकृत्-उत्तेजक, रेचन, हृद्रोग, रक्तविकार, कटुपौष्टिक।

210. Podophylum Emodi Wall.Ex Hook.F.&Th. Indian Podophyllum. पटबेल, गिरीपर्पट
(=P. Hexandrum Royle)
Cholagogue, purgative, alterative, emetic, bitter tonic.
कफपित्तहर, यकृत्-उतेजक, विसर्प, दाह, अतिसारनाशक।

211. Rheume Officinale Baillon. Rhubarb. **रेवन्दचीनी, गन्धिनी**

(=R. emodi wall. ex Meissn.)

Tonic, mild laxative, used in dyspepsia, diarrhoea, anorexia, constipation, urticaria, septic wounds.

बल्य, मृदुविरेचनी, अजीर्ण, अतिसारनाशक, शीतपित्तनाशक।

212. Taxus Wallichii (=T. Baccata L.) **तालीस पत्र, विरमी, थुनेर**

Leaves and fruits sedative, antiseptic, emmengogue.

कैंसररोधक, श्वासरोग, कास, हिक्का, अजीर्ण, मृगी (Epilepsy), बल्य।

213. Thymus Serpyllum Linn. **वन अजवायन**

(=T. Linearis)

Useful in weak vision, stomach, oilments, menstrual troubles.

मूत्ररोग, बल्य, विषघ्न, दीपन-पाचन, चर्मरोग, दन्तरोग।

214. Valeriana Wallichii DC. **तगर, सुगन्धबाला, मुश्कवाला**

Roots stimulant, carminative, antiseptic, useful in hysteria, epilepsy, chorea, nervous break down.

कफवातजन्य विकार, आमवात, अस्थिभग्न, पक्षाघात, अर्दित आमवात, अपस्मार, कामला, उदरशूल, हृद्‌दुर्बलता, श्वासरोग, विष की स्थिति में।

215. Nardostachys Jatamansi DC. **जटामांसी**

सुगन्धित, कड़वी, बल्य, उत्तेजक, विषघ्न, अपस्मार, उन्माद, पेट रोगों में लाभप्रद।



(च) सजावट व सौन्दर्यकरण पौधे

1. Aurocaria cooki
2. Bixa arellana
3. Erythrina variegata
4. Gardenia latifolia
5. Junipers communis
6. Magnolia grandiflora
7. Michelia champaca
8. Michelia champaca var. Alba.
9. Mimusops elengi
10. Pinus longifolia
11. Plumeria obtusa
12. Plumeria rubra
13. Ravenola madagascariensis
14. Samenea Samon
15. Acalypha hispida
16. Allamanda nerifolia
17. Alternanthera dentata var. ruby
18. Beloperone guttata var. yellow queen
19. Baunfelsia americana
20. Brunfelsia calcyna
21. Dombeya wallichii
22. Erythrina crista-galli
23. Eranthemum bicolor

24. Eranthemum albo moginatum
25. Euphorbia colinifolia
26. Hamelia patens
27. Hibiscus mutabilis
28. Hibiscus rose sinensis var. Cooperi
29. Hibiscus rosa sinensis var. Daffodil
30. Hibiscus rosa sinensis var. Deeprose
31. Hibiscus rosa sinensis var. H.D. Maity
32. Hibiscus rosa sinensis var. Juno
33. Hibiscus rosa sinensis var. Kalyani
34. Lagerstroemia indica var. Candida
35. Muchlenbeckia plebiclada
36. Murraya exotica
37. Mussaenda tythrothrophylla var. rosea
38. Mussoneda luteola
39. Nerium oleander var. album
40. Nerium olearder var. carnea
41. Sanchezea nobilia
42. Strobilanthes dyecrauus
43. Tabernaemontana coronaria var. dwarf
44. Tabernaemontana coronaria var. floreplano
45. Tecoma goudi choudi
46. Vinca rosea = catharanthus rosea
47. Bougainvallea spectabilis
48. Asparagus setaceus var. pyramidalis

49. Begonia rex
50. Begonia var. cleopatra
51. Begonia var.moboniana
52. Calathea bella
53. Callusia repens
54. Chlorophytum comosum var. milky way
55. Chlorophytm comosum var. vittatum
56. Chrysanthemum 120 varieties
57. Dahlia 105 varieties
58. Rose 2000 variants
59. Nyctanthes arbor-tristis
60. Coleus blumei
61. Cuphea hyssopifilia

Climbers :

1. Allamanda cathartica
2. Bougainvillea buthiana
3. Gloriosa superba
4. Passiflora edulis
5. Thunbergia mysorensis

House Plants :

1. Begonia auriculata
2. Dracaena fragrans
3. Heliconia humilis
4. Pelargonium domesticum

शब्दकोष

1. **मेध्य** (Brain tonic)— मेधा (बुद्धि) को बढ़ाने वाला द्रव्य 'मेध्य' कहलाता है।
2. **मदकारी** (Narcotic)— जो द्रव्य बुद्धि को विकृत कर दे, उसे 'मदकारी' कहते हैं। जैसे- मद्य।
3. **संज्ञास्थापन**— संज्ञा (ज्ञान) को स्थापित करने वाले द्रव्य 'संज्ञास्थापन' कहलाते है।
4. **निद्राजनन** (Hypnotic)— निद्रा कफ (शरीरदोष) एवं तम (मानसदोष) के आधिक्य से होती है। अतः कफवर्धक एवं तमोदोषवर्घक द्रव्य 'निद्राजनन' कहलाते हैं। यथा-स्निग्ध तथा मधुर रस से युक्त भोजन आदि।
5. **निद्राशमन** (Anti hyapontic)— तमोदोष तथा कफ का शमन करने वाले द्रव्य 'निद्राशमन' द्रव्य कहलाते हैं। जैसे- लंघन, रक्तमोक्ष आदि।
6. **वेदानास्थापन** (Analgestic or anodynes)— दुःखात्मक वेदना को शान्त कर सुखात्मक वेदना को स्थापित करने वाले द्रव्य 'वेदनास्थापन' कहलाते हैं।
7. **आक्षेपजनन** (Conulsant)— सुषुम्ना के पूर्वश्रृंग में स्थित चेष्टा-कोषाणुओं को क्षुब्ध कर, जो द्रव्य शरीर में अतिशयित अथवा अनियमित चेष्टायें उत्पन्न करते हैं, उन्हें 'आक्षेपजनन' कहते है।
8. **आक्षेपशमन** (Anti -convulsant)— जो द्रव्य सुषुम्ना के पूर्वश्रृंग में स्थित चेष्टाकोषाणुओं पर अवसादक प्रभाव डालते है और पेशियों के आक्षेप को शान्त करते हैं, उन्हें 'आक्षेपशमन' कहते है।
9. **चक्षुष्य**- चक्षु के लिए हितकर द्रव्य को 'चक्षुष्य' कहते हैं।
10. **तारकासंकोचक** (Myotics)— नेत्र-तारका को संकुचित करने वाले द्रव्य 'तारकासंकोचक' कहलाते है।

11. **कर्ण्य**– कर्ण के लिए हितकर द्रव्य को 'कर्ण्य' कहते है।

12. **शिरोविरेचन**– इसका प्रयोग मुख्यतः शिरोरोगों में होता है।

13. **स्वेदन (Diaphoretic)**– स्वेद की प्रवृत्ति करने वाले द्रव्यों को 'स्वेदन' या 'स्वेदजनन' कहते हैं।

14. **स्वेदोपग**– स्वेदन कर्म में सहायक द्रव्यों को 'स्वेदोपग' कहते है। यथा एरण्ड, शोभाजन आदि।

15. **स्वेदापनयन**– स्वेद को कम करने या रोकने वाले द्रव्यों को 'स्वेदापनयन' कहते है।

16. **रोमसंजजन**– जो द्रव्य रोगों को पुनः उत्पन्न करें, उन्हें 'रोगसंजनन' कहते हैं।

17. **रोमशातन**– जो द्रव्य रोमों को साफ कर दें अर्थात् गिरा दें उन्हें 'रोमशातन' कहते हैं। यथा-शंखचूर्ण और हरताल का लेप।

18. **केश्य**– केश के लिए हितकर द्रव्य को 'केश्य' कहते है।

19. **केशरञ्जन**– केशों के वर्ण को प्राकृत (काला) रखने वाले, विशेषतः पके बालों को काला करने वाले द्रव्य केशरञ्जन कहलाते हैं।

20. **विदाही (Irritanis & counter-irritants)**– जो द्रव्य स्थानिक विदाह उत्पन्न कर आभ्यन्तर अङ्गों के शोथ को दूर करे, वह 'विदाही' कहलाता है।

21. **रक्तोत्क्लेशक (Rubefacient)**– जिन द्रव्यों का त्वचा पर लेप करने से रक्तसंचय के कारण त्वचा लाल हो जाती है ताकि लालिमा के साथ प्रायः कण्डू, दाह एवं वेदना हो उन्हें 'रक्तोत्क्लेशक' कहते हैं। यथा-राई आदि।

22. **स्फोटजनन (Vesicant)**– अतितीक्ष्ण विदाही द्रव्यों के प्रयोग से त्वचा में फोड़े निकल जाते हैं। ऐसे द्रव्यों को 'स्फोटजनन' कहते हैं। यथा-चित्रक आदि।

23. **पूतिस्फोटजनन** (Pustulants)— यदि अत्यधिक तीक्ष्ण द्रव्यों का प्रयोग किया जाय तो पूतिस्फोट निकल आते हैं। ऐसे द्रव्यों को 'पूतिस्फोटजनन' कहते हैं। यथा-जयपाल आदि।

24. **दाहक** (Caustics)— जो द्रव्य अङ्ग की जीवनी शक्ति को नष्ट कर दे तथा पार्श्ववर्ती अंङ्गों में भी शोध एवं व्रणशोध उत्पन्न करे, उसे 'दाहक' कहते हैं। यथा-क्षार।

25. **विम्लापन** (Anitplogistic)— जो द्रव्य व्रणशोध में प्रयुक्त होने पर उसे बिना प्रकोप ही दबा दे, उसे 'विम्लापन' कहते हैं। यथा-कुन्दरू आदि।

26. **पाचन**— पच्यमान व्रणशोण को जो द्रव्य शीघ्र पका दें, उन्हें 'पाचन' कहते हैं। यथा-तिल, सर्षप आदि।

27. **दारण**— जो द्रव्य पक्व व्रणशोध को विदीर्ण कर दे अर्थात् फाड़ दे, उसे 'दारण' कहते हैं। यथा-चित्रक आदि।

28. **प्रपीडन**— जो द्रव्य पक्व एवं विदीर्ण व्रणों को दबाकर उनका पूय बाहर निकालने में सहायता करें, उसे 'प्रपीडन' कहते है। यथा-जौ आदि।

29. **स्नेहन**— जो द्रव्य शरीर में स्निग्धता (चिकनाहट), द्रवत्व, एवं मृदुता उत्पन्न करे, उसे 'स्नेहन' कहते हैं।

30. **स्नेहोपग**— कुछ द्रव्य स्नेहन-द्रव्यों की शक्ति की बढ़ाते हैं। अतः उनके सहायक रूप में प्रयुक्त होते हैं। ये द्रव्य 'स्नेहोपग' कहलाते हैं। यथा-मृद्वीका, मुलेठी आदि।

31. **रूक्षण**— जो द्रव्य शरीर में रूक्षता, काठिन्य तथा विशदता उत्पन्न करते हैं, उन्हे 'रूक्षण' कहते हैं।

32. **वर्ण्य**— जो द्रव्य शरीर के वर्ण को ठीक करे, उसे 'वर्ण्य' कहते ह।

33. **कण्डूघ्न**— जो द्रव्य कण्डू (खुजली) को दूर करे, उसे 'कण्डूघ्न' कहते हैं। यथा-चन्दन, उशीर, निम्ब आदि।

34. **कुष्ठघ्न**– आयुर्वेद में 'कुष्ठ' शब्द समस्त त्वग्-दोषों (Skin diseases) का वाचक है। अतः सामान्यः सभी त्वगदोषों में लाभकर द्रव्यों को 'कुष्ठघ्न' कहते हैं।

35. **उदर्दप्रशमन**– शीत वायु के स्पर्श से त्वचा पर बर्रे काटने के समान जो शोथयुक्त चकते उठ जाते हैं, उन्हें 'उदर्द' (Uritcaria) कहते हैं। इनको शान्त करने वाले द्रव्यों का 'उदर्दप्रशमन' कहते है।

36. **हृद्य (Cardiac tonics)**– हृदय को बल प्रदान करने वाले द्रव्य 'हृद्य' कहलाते है। यथा-अर्जुन, स्वर्ण, मुक्ता आदि।

37. **हृदयोत्तेजक (Cardiac Stimulauts)**– हृदय को उत्तेजित कर उसकी गति को बढ़ाने वाले द्रव्य 'हृदयोत्तेजक' कहलाते हैं। यथा-अद्रिनिलीन, सोत्र आदि।

38. **हृदयावसादक (Curdiac depressant)**– हृदय को अवसादित कर उसकी गति को कम करने वाले द्रव्य 'हृदयावसादक' कहलाते हैं। यथा-अहिफेन, हृत्यत्री आदि।

39. **रक्तभारवर्धक**– धमनियों में रक्तभार को बढ़ाने वाले द्रव्य 'रक्तभारवर्धक' कहलाते हैं। यथा-कुपीलु, हृत्पत्री आदि।

40. **रक्तभारशामक**– रक्तभार को कम करने वाले द्रव्य 'रक्तभारशामक' कहलाते हैं। यथा-सर्पगन्धा आदि।

41. **रक्तस्म्भन या शोणितस्थापन (Styptic)**– स्थानीय प्रयोग से जो द्रव्य रक्तस्राव को बन्द करे, वह 'रक्तस्तम्भन' या 'शोणितस्थापन' कहलाता है।

42. **रक्तस्रावक**– स्थानिक प्रयोग से जो द्रव्य रक्तस्राव को बढ़ा दे, उसे 'रक्तस्रावक' कहते है।

43. **शोथजनन**– जो द्रव्य शोथ उत्पन्न करे, उन्हें 'शोथजनन' कहते हैं।

44. **गण्डमालनाशक**– जो द्रव्य रसग्रन्थियों की वृद्धि को दूर करे, उसे 'गंडमालानाशक' कहते हैं। यथा- काचनार, मुण्डी आदि।

45. **श्वसनकेन्द्रोत्तेजक** (**Drugs stimulating the respiratory centre**)– श्वसनकेन्द्र को उत्तेजित कर श्वसन को बढ़ाने वाले द्रव्यों को 'श्वसनकेन्द्रोत्तेजक' कहते हैं। यथा-कुपीलु, कर्पूर आदि।

46. **श्वसनकेन्द्रावसादक** (**Drugs depressing the respiratory centre**)– श्वसनकेन्द्र पर अवसादक प्रभाव करके, जो द्रव्य श्वसन को कम करे, उसे 'श्वसनकेन्द्रावसादक' कहते हैं। यथा-अहिफेन, वत्सनाभ आदि।

47. **श्वसनोत्तेजक** (**Respiratroy stimulants**)– श्वसनकर्म को बढ़ाने वाले द्रव्य 'श्वसनोत्तेजक' कहलाते हैं। यथा-प्रांगार द्विजारेय आदि।

48. **छेदन** (**Expectorant**)– जो द्रव्य अपने प्रभाव से संचित कफादि दोषों को बाहर निकालता है, उसे 'छेदन' कहते हैं। यथा-यवक्षार, मरिच, हिंगु आदि।

49. **कासहर** (**Bronchial sedatives**) – कास के वेग को शान्त करने वाले द्रव्य को 'कासहर' कहते हैं। यथा- द्रक्षा, हरीतकी आदि।

50. **श्वासहर** (**Bronchial antispasmodics**)– प्राणवायु का अधिक मात्रा में ऊर्ध्वगामी होना, जिसमें वक्षःस्थल आँधी के समान गति करे, 'श्वास' कहलाता है। इसे 'दम फूलना' भी कहते हैं। इस अवस्था को जो द्रव्य दूर करे, उसे 'श्वासहर' कहते हैं।

51. **हिक्कानिग्रहण**– जो द्रव्य हिक्का (हिचकी) को बन्द करे वह 'हिक्कानिग्रहण' कहलाता है।

52. **कण्ठ्य** (**Benefecial fro Throat**)– कण्ठ (स्वर) को ठीक करने वाले द्रव्य को 'कण्ठ्य' या 'स्वर्य्य' कहते हैं। यथा- सारिवा, मुलेठी आद्रि।

53. **श्लेष्मपूतिहर** (**Pulmonary antiseptics**)– जो द्रव्य श्लेष्मा की पूति (Sepsis) तथा तज्जन्य दुर्गन्ध को दूर करे, उसे 'श्लेष्मपूतिहर' कहते हैं। यथा- हिंगु, रसौन आदि।

54. **लालाप्रसेकजनन** (Sialagogues)— लाला स्राव (Salivary secretions) को बढ़ाने वाले द्रव्य 'लालाप्रसेकजनन' कहलाते हैं। यथा- तुम्बरू आदि।

55. **लालप्रसेकशमन** (Anti-sialagogue)— लालास्राव को कम करने वाले द्रव्य 'लालाप्रसेकशमन' कहलाते हैं।

56. **तृष्णानिग्रहण**— जो द्रव्य तृष्णा (प्यास) को कम करे, उसे 'तृष्णानिग्रहण' कहते हैं। यथा- नागमोथा, पित्तपापड़ा आदि।

57. **दुर्गन्धनाशन**— जो द्रव्य मुख की दुर्गन्ध दूर करते हैं, उन्हें 'मुखदुर्गन्धनाशन' कहते हैं। यथा- लवङ्ग, एला आदि।

58. **मुखवैशद्यकारक**— मुख की पिच्छिलता को दूर करने वाले द्रव्यों को 'मुखवैशद्यकारक' कहते है। यथा- ताम्बूल, पूग आदि।

59. **दन्तय** (Dentifrices)— दाँतों के लिए हितकर द्रव्य 'दन्त्य' कहलाते हैं।

60. **दन्तशोधन**— दाँतो को शुद्ध एवं स्वच्छ बनाने वाले द्रव्यों को 'दन्तशोधन' कहते हैं।

61. **दन्तदार्ढ्यकर**— दाँतों को दृढ़ बनाने वाले द्रव्य 'दन्तदार्ढ्यकर' कहलाते हैं।

62. **तृप्तिघ्न**— 'तृप्ति' कफ का एक नानात्मज (विशिष्ट) विकार है, जिसमें आमाशय कफ से परिपूर्ण होने के कारण पेट भरा प्रतीत होता है। इस विकार को नष्ट करने वाल द्रव्य 'तृप्तिघ्न' कहलाते हैं। यथा- शुण्डी, चित्रक आदि।

63. **रोचन**— रुचि (Relish) वस्तुतः पुरुष के महास्रोत विशेषतः मुख तथा आमाशय की अवस्था से संबन्ध रखता है। इसमें भोजन तो आदमी कर लेता है, किन्तु उसमें स्वाद नहीं मालूम होता। इस विकार को 'अरुचि' कहते हैं। इसे दूर करने वाले द्रव्य 'रोचन' कहे जाते हैं।

64. **दीपन** (Stomachics)— जिन द्रव्यों से अग्नि (जठराग्नि) दीप्त होती है अर्थात् बढ़ती है, उन्हें 'दीपन' कहते हैं।

65. **विदाही**— जो द्रव्य पच्यमानावस्था में पित्त का अधिक प्रकोप एवं तज्जन्य विदाह उत्पन्न करता है, वह 'विदाही' कहलाता है।

66. **शामक** (Gastric sedatives)— जो द्रव्य आमाशय के विदाह क्षोभ को शान्त करे उसे 'शामक' कहते हैं। ये द्रव्य पित्तशामक होते हैं।

67. **अनुलोमन** (Carminatives)— जो द्रव्य वातनाड़ियों एवं पेशियो को प्रभावित कर आमाशय में उत्पन्न मलभूत वायु को बाहर निकालते हैं, वे द्रव्य 'अनुलोमन' कहलाते हैं।

68. **विष्टम्भी**— जो द्रव्य पच्यमानावास्था में अधिक प्रतिलोम वायु की उत्पत्ति करते हैं, वे 'विष्टम्भी' कहलाते हैं। यथा- कटहल, लोणिका आदि।

69. **वमन** (Emetics)— जो द्रव्य आमाशयस्थ अपक्व अन्न, श्लेष्मा एवं पित्त आदि दोषों को ऊर्ध्वभाग (मुखमार्ग) से बाहर निकाले, उसे 'वमन' या 'ऊर्ध्वभागहर' कहते हैं। यथा- मदनफल आदि।

70. **वमनोपग**— वमन में सहायक द्रव्यों को 'वमनोपग' कहते है। यथा- मधु, लवण, मुलेठी आदि।

71. **छर्दिनिग्रहण** (Anti-emetic)— जो द्रव्य वमन को रोके तथा कारणभूत दोष को शान्त करे, उसे 'छर्दिनिग्रहण' कहते हैं। यथा- जम्बू, आम्रपल्लव आदि।

72. **उपशोषण**— जो द्रव्य महास्रोत आमाशय और अन्त्र में स्थित द्रव पदार्थों को शोषण करता है, उसे 'उपशोषण' कहते हैं। यथा- कुटज आदि।

73. **पुरीषजनन**— जो द्रव्य पुरीष को अधिक मात्रा में उत्पन्न करें, उन्हें 'पुरीषजनन' कहते हैं। यथा-उड़द, यव आदि।

74. **रेचन (Purgatives)**– जो द्रव्य अधोमार्ग (गुदा) से दोषों को बाहर निकाले, उसे 'रेचन' या 'अधोभागहर' कहते हैं।

75. **विरेचनोपग**– विरेचन के साथ प्रयुक्त होने वाले उपयोगी द्रव्यों को 'विरेचनोपग' कहते हैं। यथा- द्राक्षा आदि।

76. **पुरीषसंग्रहणीय**– जो द्रव्य अति एवं द्रवरूप में आने वाले पुरीष को बांधे अर्थात् रोके एवं ठोस बनावे, उसे 'पुरीषसंग्रहणीय' कहते हैं।

77. **पुरीषविरजनीय**– जो द्रव्य पुरीष के दोषों को दूर कर उसके वर्ण को प्राकृत कर दे, उसे 'पुरीषविरजनीय' कहते हैं। यथा- जम्बू, मुलेठी आदि।

78. **शूलप्रशमन**– जो द्रव्य शूल (उदरशूल) को शान्त करे, उसे 'शूलप्रशमन' कहते हैं। यथा- पञ्चकोल आदि।

79. **आस्थापन**– जो द्रव्य शरीरगत दोषों विशेषतः वायु का संशाधोन कर शरीर को स्थापित करें अर्थात् दृढ़ बनाएं उन्हे 'आस्थापन' कहते हैं। यथा- पाटला आदि।

80. **आस्थापनोपग**– आस्थापन कर्म में सहायक द्रव्यों को 'आस्थापनोपग' कहते हैं। यथा- त्रिबत्, इन्द्रयव आदि।

81. **अनुवासन**– जो द्रव्य शरीर को स्निग्ध और दृढ़ बनाए, उसे 'अनुवासन' कहते हैं। यथा- तैल, घृत आदि।

82. **अनुवासनोपग**– जो द्रव्य अनुवासन कर्म में सहायक होते हैं, वे 'अनुवासनोपग' कहलाते हैं। यथा- रास्ना, देवदारु आदि।

83. **संशोधन**– जो द्रव्य ऊर्ध्वभाग (मुखमार्ग) तथा अधोभाग (गुदामार्ग) दोनों मार्गो से दोषों को निकालें, उसे 'संशोधन' या 'उभयती-भागहर' कहते हैं। यथा- देवदाली।

84. **कृमिघ्न**– जो द्रव्य शरीर के बाह्य तथा आभ्यन्तर कृमियों को नष्ट करें तथा उन्हें बाहर निकालें, उसे 'कृमिघ्न' कहते हैं।

85. **पित्तस्रावक** (Choleretics)– जो द्रव्य यकृत् को उत्तेजित कर, पित्त का स्राव बढ़ाते हैं, वे 'पित्तस्रावक' कहलाते हैं। यथा- पित्तलवण, गरोचन आदि।

86. **पित्तसारक** (Cholagogue)– जो द्रव्य पित्ताशय से पित्त का निर्हरण करते हैं, वे 'पित्तसारक' कहलाते हैं।

87. **मधुरकजनन**– जो द्रव्य यकृत् में संचित शर्कराजनन को मधुरक (Glucose) में परिणत करते हैं, जिससे रक्त में शर्करा की मात्रा बढ़ जाती है, वे द्रव्य 'मधुरकजनन' कहलाते हैं। यथा- अड्रिनिलीन आदि।

88. **मधुरकशमन**– जो द्रव्य यकृत् के शर्कराजनन कार्य को अवसादित कर रक्तगत शर्करा की मात्रा को कम करते हैं, वे 'मधुकरशमन' कहलाते हैं। यथा- बीजक, कारवेल्लक आदि।

89. **अर्शोघ्न**– अर्श के कारण-दोष को शान्त कर अंकुरों को नष्ट करने वाले द्रव्यों को 'अर्शोघ्न' कहते हैं।

90. **प्रजास्थापन**– जो द्रव्य गर्भाशयगत दोषों को दूर कर गर्भधारण कराते हैं, वे द्रव्य 'प्रजास्थापन' कहलाते हैं। यथा- ब्राह्मी, लक्ष्मणा आदि।

91. **गर्भरोधक**– जो द्रव्य गर्भधारण में अवरोध उत्पन्न करते हैं, वे 'गर्भरोधक' कहलाते हैं। यथा- गुला, पाठा।

92. **गर्भाशयसंकोचक**– जो द्रव्य गर्भाशय में संकोचन उत्पन्न कर उसके अन्तर्गत पदार्थों को बाहर निकालता है, उसे 'गर्भाशयसंकोचक' कहते हैं।

93. **गर्भाशयशामक** (Uterine sedative)– जो द्रव्य गर्भाशय के संकोच को शान्त करे, उसे 'गर्भाशयशामक' कहते हैं। यथा- सूची आदि।

94. **आर्त्तवजनन** (Emmenagogue)– जो द्रव्य आर्त्तव का स्राव बढ़ाते हैं, उन्हें 'आर्त्तवजनन' कहते हैं।

95. **आर्त्तवशमन** (Anti-emmenagogue)– आर्त्तव के स्राव को कम करने वाले द्रव्य 'आर्त्तवशमन' कहलाते हैं। यथा- नागकेशर, लोघ्न आदि।

96. **स्तन्यजनन** (Uterine sedative)– स्तनों मे स्तन्य (दूध) उत्पन्न करने वाले या बढ़ाने वाले द्रव्य 'स्तन्यजनन' कहलाते हैं। यथा- शतावरी, ईक्षुमूल आदि।

97. **स्तन्यशमन** (Anti-galactogoue)– जो द्रव्य स्तन्य (दूध) का स्राव कम करे, उसे 'स्तन्यशमन' कहते हैं। यथा- मल्लिका।

98. **स्तन्यशोधन**– दूषित स्तन्य (दूध) को शुद्ध करने वाले द्रव्य 'स्तन्यशोधन' कहलाते हैं।

99. **वाजीकरण** (Aphrodisiac)– जिस द्रव्य के सेवन से शुक्र, हर्ष एवं मैथुन-शक्ति की वृद्धि हो, उसे वाजीकरण या वृष्य कहते हैं।

100. **मूत्रविरेचनीय** (Diuretics)– जो द्रव्य मूत्र को अधिक मात्रा में लाते हैं, उन्हें 'मूत्रविरेचनीय' कहते है। इसे 'वस्तिशोधन' और 'मूत्रल' भी कहते हैं।

101. **मूत्रविरजनीय**– जो द्रव्य मूत्र के वर्ण को प्राकृत बनाएं, उन्हें 'मूत्राविरजनीय' कहते हैं। यथा- कमल के फूल, मूलेठी आदि।

102. **अश्मरीभेदन** (Urinary lithontriptics)– मूत्रवह-संस्थान में संचित अश्मरी को तोड़ने वाले द्रव्य 'अश्मरीभेदन' कहलाते हैं।

103. **मूत्रसंग्रहणीय** (Urinary astrinents)– जो मूत्र की प्रवृत्ति को कम करे उसे 'मूत्रसंग्रहणीय' कहते हैं। यथा- जामुन, आम आदि।

104. **मूत्रविशोधन** (Urinary antisetics)– जो द्रव्य मूगत्रत पुति (Sepsis) तथा जीवाणुओं को नष्ट कर मूत्र को शुद्ध बनाएं, उन्हें 'मूत्रविशोधन' कहते हैं।

105. **सन्तापहर** (Antipyretic)– जो द्रव्य ज्वर के सन्ताप को कम करें, वे 'सन्तापहर' कहलाते हैं।

106. **विषमज्वरघ्न** (Antiperiodic)– जो द्रव्य नियतकाल पर आने वाले ज्वरों को रोकते हैं, उन्हें 'विषमज्वरघ्न' कहते हैं। यथा- करञ्ज, सप्तपर्ण, कुनैन आदि।

107. **दाहप्रशमन** (Refrigerants)– जो द्रव्य बाह्य और आभ्यन्तर दाह को शान्त करे, वह 'दाहप्रशमन' कहलाता है। यथा- कमल, चन्दन आदि।

108. **शीतप्रशमन**– जो द्रव्य शीत (ठंडक) को दूर करे, वह 'शीतप्रशमन' कहलाता है।

109. **कोथप्रशमन** (Antiseptic)– जो द्रव्य जीवाणुओं की वृद्धि तथा तज्जन्य कोथ (सड़न) को रोकते हैं, किन्तु उसका नाश नहीं करते, उन्हें 'कोथप्रशमन' कहते हैं।

110. **रक्षोघ्न** (Disinfectant)– ये जीवाणुओं को नष्ट करते हैं, अतः व्रण एवं प्रसव आदि के रक्षाकर्म में प्रयुक्त होते हैं। यथा- सर्वप, निम्ब, गुग्गुल आदि।

111. **पूतिहर** (Deodorants)– ये द्रव्य दुर्गन्ध को नष्ट करते हैं। यथा- कोयला, लोषान आदि।

112. **व्रणशोधन**– जो द्रव्य व्रणों को शुद्ध करते हैं, उन्हे 'व्रणशोधन' कहते हैं। यथा- गांगेरुकी आदि।

113. **जीवनीय** (Nutrients)– जो द्रव्य जीवन का धारण करे, उसे 'जीवनीय' कहते हैं। शरीर क्रियाओं में निरन्तर जो शक्ति क्षीण होती रहती है, इन द्रव्यों से वह पूर्ण होती रहती है। यथा- विदारी, मुजातक आदि। दुग्ध जीवनीय द्रव्यों में सर्वोत्तम माना गया है।

114. **सन्धानीय** (Union-promoters)– भग्न अर्थात् विच्छिन्न रक्त, मांस, अस्थि आदि धात्वयवों को जोड़ने में सहायक द्रव्य 'सन्धानीय' कहलाता है। यथा- मुलेठी आदि।

115. **बल्य** (Tonics)– जो द्रव्य शरीर के बल (शक्ति Vitality) को बढ़ाते हैं, उन्हें 'बल्य' कहते हैं।

116. **ओजोवर्धक**– ओज समस्त धातुओं का सारभाग है, जो समस्त शरीर में व्याप्त रहता है और जिसके कारण शरीर का बल प्राप्त होता है। जो द्रव्य ओज को बढ़ाते हैं, उन्हें 'ओजोवर्धक' कहते हैं। यथा गोक्षीर।

117. **ओजोह्रासक (विकासी)**– जो द्रव्य ओज के विपरीत गुण होने से, ओज को क्षीण करते हैं तथा परिणामस्वरूप शरीर में शैथिल्य (दौर्बल्य) उत्पन्न करते हैं, वे 'ओजोह्रासक' कहलाते हैं। यथा- पूग, कोदी आदि।

118. **रसायन**– जो द्रव्य शरीर के रस-रक्तादि समस्त धातुओं को बढ़ा कर शरीर की शक्ति एवं आयु को बढ़ाए, उसे 'रसायन' कहते हैं।

119. **विष (Poisons)**– जो द्रव्य ओज का क्षय करके विषाद उत्पन करते हैं, उन्हें 'विष' कहते हैं। यथा- वत्सनाभ आदि।

120. **उपविष**– विषों की अपेक्षा जिनका प्रभाव न्यून होता है, उन्हें 'उपविष' कहते हैं। यथा- गुञ्जा आदि।

121. **विषघ्न (Antidotes)**– विषप्रभाव को नष्ट करने वाले द्रव्यों को 'विषघ्न' या 'अगद' कहते हैं। यथा- शिरोष आदि।

122. **रसवर्धन**– रस धातु को बढ़ाने वाले द्रव्य 'रसवर्धन' कहलाते हैं। यथा- क्षीर।

123. **रसक्षपण**– रस धातु को घटाने वाले द्रव्य 'रसक्षपण' कहलाते हैं। यथा- यव आदि।

124. **शोणितस्थापन**– जो द्रव्य रक्त को बढ़ावे तथा रक्तस्राव को रोके, उसे 'शोणितस्थापन' कहते हैं।

125. **रक्तवर्धन**– रक्त धातु को बढ़ाने वाले द्रव्य 'रक्तवर्धन' कहलाते हैं।

126. **रक्तकणवर्धक (Heamatinics)**– रक्तकणों के भीतर रक्तरक्षक पदार्थ (Haemeglobin) होता है, जो प्राणवायु का वहन करता है। ऐसे द्रव्य जो रक्तकणों की संख्या बढ़ाते हैं, वे 'रक्तकणवर्धक' कहलाते हैं। यथा- लौह, ताम्र आदि।

127. **श्वेतकणवर्धक**– जो द्रव्य रक्तगत श्वेतकणों को बढ़ाते हैं, उन्हें 'श्वेतकण वर्धक' कहते हैं।

128. **अम्लवर्धक**— जो द्रव्य रक्त में अम्ल की मात्रा बढ़ाते हैं, उन्हें 'अम्लवर्धक' कहते हैं। यथा- सोमल, स्फुरक आदि।

129. **क्षारवर्धक**— जो द्रव्य रक्त की क्षारीयता बढ़ाते हैं, उन्हें 'क्षारवर्धक' कहते हैं। यथा- अपामार्ग आदि।

130. **रक्तस्तम्भन** (Heamostatics)— रक्तस्राव को रोकने वाले द्रव्य 'रक्तस्तम्भन' कहलाते हैं। यथा- लोघ्र, नागकेसर आदि।

131. **रक्तनाशन**— रक्तकणों को नष्ट करने वाले तथा रक्तधातु को क्षीण करने वाले द्रव्य 'रक्तनाशन' कहलाते हैं। यथा- सोमल, स्फुरक आदि।

132. **रक्तदूषण**— रक्त को दूषित (प्रकुपित) करने वाले द्रव्य 'रक्तदूषण' कहलाते हैं।

133. **रक्तप्रसादन**— रक्त के विकारों को दूर कर उसे शुद्ध बनाने वाले द्रव्यों को 'रक्तप्रसादन' या 'रक्तशोधन' कहते हैं। यथा-सारिवा, मञ्जिष्ठा आदि।

134. **बृंहण**— शरीर को बढ़ाने वाले (पुष्ट=मोटा करने वाले) द्रव्य 'बृंहण' कहलाते हैं।

135. **लंघन**— जो द्रव्य शरीर को दुबला (कृश) बनावे तथा शरीर में हल्कापन लावे उसे लंघन कहते हैं। यथा- यव, वचा आदि।

136. **श्रमहर**— मांसपेशियों के श्रम (Fatigue) को दूर करने वाले द्रव्य 'श्रमहर' कहलाते हैं। यथा- द्राक्षा आदि।

137. **अङ्गमर्दप्रशमन**— जो द्रव्य अंगमर्द (मांसपेशियों की हल्की ऐंठन-पीड़ा) को शान्त करे, वह 'अंगमर्द-प्रशमन' कहलाता है। यथा- लघुपञ्चमूल, काकोली आदि।

138. **व्रणरोपण**— जो द्रव्य व्रणों का रोपण (Healing) शीघ्र करते हैं, उन्हें 'व्रणरोपण' कहते हैं। यथा- मांसरोहिणी आदि।

139. **उत्सादन**— शुष्क अल्प मांस वाले तथा गहरे व्रणों में मांस की वृद्धि कर उन्हें उठाने वाले द्रव्यों को 'उत्सादन' कहते हैं। यथा- अश्वगन्धा आदि।

140. **अवसादन**– अधिक उभरे हुए व्रणों में मांस को घटाने वाले द्रव्य 'अवसादन' कहलाते हैं। यथा– मनःशिला, तुत्थ आदि।

141. **मेदोवर्धन**– मेदोधातु को बढ़ाने वाले द्रव्य 'मेदोवर्धन' कहलाते हैं। यथा– घृत, वसा आदि।

142. **मेदःक्षपण**– मेदोधातु को क्षीण करने वाले द्रव्य 'मेदःक्षपण' या 'मेदोनाशन' कहलाते हैं। यथा– गुग्गुलु, यव, चणक आदि।

143. **अस्थिवर्धन**– जो द्रव्य अस्थिधातु को विशेष रूप से बढ़ाते हैं, वे 'अस्थिवर्धन' कहलाते हैं। यथा– प्रवाल, मुक्ता आदि।

144. **अस्थिक्षपण**– अस्थिधातु को क्षीण करने वाले द्रव्य 'अस्थिक्षपण' कहलाते हैं।

145. **अस्थिसन्धानीय**– भग्न अस्थि को जोड़ने वाले द्रव्य 'अस्थिसंधानीय' कहलाते हैं। यथा– अस्थिश्रंखला।

146. **मज्जवर्धन**– मज्जाधातु को बढ़ाने वाले द्रव्य 'मज्जवर्धन' कहलाते हैं। यथा– मज्जा।

147. **मज्जक्षपण**– मज्जा धातु को क्षीण करने वाले द्रव्य 'मज्जक्षपण' कहलाते हैं।

148. **शुक्रवर्धन**– जो द्रव्य शुक्र को बढ़ाते हैं, वे 'शुक्रवर्धन' कहलाते हैं।

149. **शुक्रनाशन**– शुक्र को क्षीण बनाने वाले द्रव्य 'शुक्रनाशन' कहलाते हैं।

150. **प्रमाथी**– जो द्रव्य अपने वीर्य से स्रोतों के मल को मथ कर बाहर निकाल दे, उसे 'प्रमाथी' कहते हैं। यथा– मरिच, वचा आदि।

151. **अभिष्यन्दी**– जो द्रव्य अपने गुणों से स्रोतों में अवरोध उत्पन्न करे उसे 'अभिष्यन्दी' कहते हैं।

152. **वातकोपन**– वातदोष को प्रकुपित करने वाले अर्थात् बढ़ाने वाले द्रव्य *'वातकोपन' कहलाते हैं। यथा– जम्बू, शुष्क शाक आदि।*

153. **वातशमन**– वातदोष को शान्त करने वाले अर्थात् घटाने वाले द्रव्य 'वातशमन' कहलाते हैं। यथा- देवदारू, कुष्ठ आदि।

154. **पित्तकोपन**– पित्त को बढ़ाने वाले द्रव्य 'पित्तकोपन' कहलाते हैं। यथा- चन्दन आदि।

155. **पित्तशमन**– पित्त को शान्त करने वाले द्रव्य 'पित्तशमन' कहलाते हैं। यथा- चन्दन आदि।

156. **कफकोपन**– कफ को प्रकुपित करने वाले द्रव्य 'कफकोपन' कहलाते हैं। यथा- माष, गोधूम आदि।

157. **कफशमन**– कफ को शान्त करने वाले द्रव्य 'कफशमन' कहलाते हैं। यथा- कुष्ठ आदि।

158. **संशमन**– जो द्रव्य बढ़े हुए दोषों को बाहर न निकाल कर, भीतर ही शान्त करें, उसे 'संशमन' कहते हैं। यथा- गुडुची आदि।



दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट) द्वारा प्रकाशित यौगिक साहित्य एवं ऑडियो-वीडियो कैसेट

पुस्तक का नाम	मूल्य
योग साधना एवं योग चिकित्सा रहस्य (रंगीन चित्रों सहित विशिष्ट संस्करण) लेखकः पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज	125/-
प्राणायाम रहस्य (हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी) (रंगीन चित्रों सहित विशिष्ट संस्करण) लेखक : पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज	50/-
दिव्य स्तवन (भजन) ऑडियो कैसेट (भाग-प्रथम, भाग-द्वितीय) दोनों का मूल्य (पूज्य स्वामी जी महाराज द्वारा योग शिविरों में गाये जाने वाले भजन)	50/-
योगनिद्रा (ऑडियो कैसेट)	30/-
गायत्री मन्त्र एवं महामृत्युञ्जय मन्त्र जप (पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के स्वर में)	30/-
वैदिक सन्ध्या व यज्ञ विधि (ऑडियो कैसेट) (पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के स्वर में)	30/-
दिव्य योग साधना (आसन-प्राणायाम) V.C.D. भाग-1-2	150/-
औषध दर्शन (परिवर्धित संस्करण) (हिन्दी, अंग्रेजी)	30/-
योगासन चार्ट भाग 1 (उदररोग, मोटापा, मधुमेह आदि)	10/-
योगासन चार्ट भाग 2 (कमर दर्द, स्पोंडोलाइटिस एवं सूर्य नमस्कार)	10/-
योग सन्देश (मासिक पत्रिका)	15/-
वैदिक नित्यकर्म-विधि (पूज्य स्वामी जी महाराज के अमृत उपदेशों एवं भजनों सहित)	25/-
दिव्य औषधीय सुगन्धित एवं सौन्दर्यकरण पौध	30/-

हरिद्वार की पुण्यभूमि पर

दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट) का बहुआयामी सेवा प्रकल्प



पतञ्जलि योगपीठ

उद्देश्य एवं संकल्प

हजारों बीघा भूमि पर स्थापित होने जा रहे पतञ्जलि योगपीठ का शिलान्यास ७ दिसम्बर २००३ को सम्पन्न हुआ है। इस बहु-आयामी योगपीठ पर लगभग सौ करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान है। यह योगपीठ विश्व भर में अपने ही स्तर का विशालतम संस्थान होने का गौरव प्राप्त करेगा। इस सेवा प्रकल्प का महान् उद्देश्य है- योग, आयुर्वेद और वैदिक संस्कृति की गरिमा देश-विदेश में स्थापित करते हुए भारत को पुनः विश्व-गुरु के वर्चस्वी पद पर प्रतिष्ठित कराना जिससे विश्व-शान्ति और मानव-कल्याण का पथ प्रशस्त हो सके। पुरुषार्थ-चतुष्टय अर्थात् धर्म,अर्थ,काम,मोक्ष ही मानव के क्रमिक विकास का सनातन पथ है, जिसे पार करने के लिये शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से हमें सबल बनना होगा, जिसमें योग, आयुर्वेद एवं वेद ही हमारे सम्बल, हमारे सहायक, हमारे प्रेरक और हमारे पथ-प्रदर्शक बन सकते हैं। इन तीनों ही विधाओं पर गहन मंथन, अनुसंधान और प्रशिक्षण की व्यवस्था पतंजलि योगपीठ में प्रस्तावित है। इस महान् सारस्वत यज्ञ में विश्व-नागरिक की हैसियत से हर व्यक्ति की आहुति पड़नी चाहिए तभी यह यज्ञ सफल होगा।

साधन एवं साधना

साधना की इस तपोभूमि को स्वावलम्बी बनाने के लिये कुछ मूलभूत साधनों का जुटाना नितांत आवश्यक है। अतः पतंजलि योगपीठ में एक हजार साधकों के लिये सुविधाजनक आवास व्यवस्था, योगसाधना मन्दिर, अनुसंधान कक्ष, पुस्तकालय, चिकित्सालय, जड़ी-बूटी उद्यान, गोशाला, यज्ञशाला, प्रवचन भवन, फार्मेसी, प्रकाशन-गृह, मुद्रणालय, कर्मचारियों, स्वयंसेवकों, संतों व आगन्तुकों के लिये निवास, कार्यालय भवन, अन्नपूर्णा गृह आदि का विशाल भू-खण्ड पर निर्माण प्रस्तावित है। यह योगपीठ भविष्य में देश-विदेश के योगाचार्यों, आयुर्वेदाचार्यों, दार्शनिकों, अध्यात्मवादियों, वैज्ञानिकों और शोध-कर्त्ताओं का संगम स्थल सिद्ध होगी। भारतीय प्रज्ञा का देश-देशांतर में विविध भाषाओं में प्रचार-प्रसार का महत् कार्य इस योगपीठ द्वारा सम्पादित होगा। इस योगपीठ द्वारा प्रशिक्षित योग-साधक, धर्म-प्रचारक और वैद्य विश्वभर में योग, वेद और आयुर्वेद का वर्चस्व स्थापित कर सकेंगे। विशुद्ध रूप में यह योगपीठ ऋषिकल्प तपोभूमि का साकार एवं शाश्वत रूप ग्रहण कर मानव कल्याण एवं विश्व-शान्ति के लिये कार्य करेगा। अतः इस योजना में सहभागी बनना आपका अधिकार ही नहीं, कर्त्तव्य भी है। इस प्रकार के बहु-आयामी संस्थान से जुड़ना निश्चय ही हम भारतीयों के लिये गौरवशाली अनुभव होगा।

महायज्ञ में आपका सहयोग

आपने अपने परिवार व बच्चों के सुख के लिये लाखों कमाये व खर्च किये हैं, परन्तु जिस समाज से आपको सब कुछ मिला, उस समाज के लिये आपने क्या किया है? तो आइए! स्वार्थ के आवृत्त से बाहर निकल कर परमार्थ के प्रशस्त क्षेत्र में प्रवेश करें। समाज की सुरक्षा एवं सम्पन्नता में ही हमारे जीवन की सार्थकता निहित है। योगपीठ की सदस्यता व सहयोग की निर्धारित राशि इस प्रकार हैः

१. संस्थापक सदस्य- पाँच लाख रुपये
२. संरक्षक सदस्य- दो लाख इक्यावन हजार रुपये
३. आजीवन सदस्य- एक लाख रुपये
४. विशिष्ट सदस्य- इक्वायन हजार रुपये
५. सम्मानित सदस्य- इक्कीस हजार रुपये
६. सामान्य सदस्य- ग्यारह हजार रुपये

इसके अतिरिक्त भी यदि आप सहयोग देना चाहते हैं तो स्वागत है।